ॐ

ब्रह्मलीन परमहंस श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज

संस्थापक– भगवद् भक्ति आश्रम, जीन्द

के प्रति

श्रद्धांजली

[भक्ति के वियोगांक से एकत्रित]

—:※:—

सहायक संग्रहकर्त्ता

हरिराम शर्मा, भ०भ० आश्रम, जीन्द

प्रकाशक

भगवद् भक्ति आश्रम, जीन्द

३२ वी निर्वाण पचमी स० २०२५

प्रथम बार १०००   मूल्य ३० पैसे

राम प्रैस, गांधी गली, जींद

ॐ

नम्र निवेदन

सन्त महात्माओं का जीवन परोपकारार्थ होता है। यतः

परोपकाराय फलन्ति वृक्षा, परोपकाराय वहन्ति नद्याः।
परोपकाराय दुहन्ति गावाः, परोपकाराय हि सतां विभूतयः॥

सन्त वटप सरिता गिरि धरणी। पर हित हेत इनन की करनी॥

वे अज्ञान दूर करते हैं और भूले भटके मनुष्यों को सन्मार्ग दिखाकर उनको उनके कर्तव्य में लगा देते हैं। यह ही उनकी सम्पत्ति है ईश्वर ने सृष्टि की रचना की, मनुष्य, पशु पक्षी आदि सब जीवों के लिए समस्त पदार्थ बनाये और सुख शान्ति पाने के लिये नियम बनाये – मनुष्यों में बुद्धि व ज्ञान का प्रकाश दिया – परन्तु मनुष्य अपने अज्ञान व प्रमाद से उन पदार्थों का ठीक उपयोग नहीं करता – इसीलिए वह दीन दुखी रहता है – श्री १०८ महाराज जी बड़े दयालु थे वे प्राणीमात्र का हित चाहते थे परन्तु मनुष्य पशु और वृक्षों की तरफ उनका विशेष ध्यान था। इनमें भी स्त्री गौ और दलित वर्ग का उत्थान कराना चाहते थ। उन्होंने बताया कि पशु और वृक्षो के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। अतः मनुष्य जीवनोपयोगी पशु और वृक्षों की उन्नति होनी चाहिए अब इनकी उन्नति कसे हो, इसके लिए श्री महाराज जा ने कुछ उपाय बताये और कार्य रूप में कर दिखाये।

मनुष्यों की उन्नति के लिए आपने बताया है कि दस २ पांच २ ग्रामों के बीच में एक २ आश्रम बनाया जाय और वहों जगंल में लड़की लड़कों की एक पाठशाला होनी चाहिए १५-१७ वर्ष तक लड़की और १८-२० वर्ष तक लड़कों के आचार,की ब्रह्मचर्य की पूरी २ देखभाल के साथ रक्षा की जाए। उन्हें विषय भोगों के अधीन न होना चाहिए, अधिक उपाधि न बढ़ावें और न अधिक सन्तान पैदा करें आवश्यकतायें जितनी कम हो सकें कम करें,स्त्री पुरुषों को ऋतुगामी हो उत्तम सन्तान पैदा करने का दृढ़ सकल्प करना चाहिए स्त्री को पतिव्रत धर्म और पुरुष को नारीव्रत धर्म करना चाहिए,हरेक काम सब की भलाई के लिए पवित्र भावना से करना चाहिए,सादगी से रहना सात्विक भोजन करना आदि बहुत सी बातें मनुष्यों के जीवन सुधार के लिए बतलाई हैं। और भगवद्भक्ति आश्रमों का निर्माण किया। सबसे प्रथम पुस्तक के पीछे छपे हुवे आश्रम के ८ उद्देश्य तथा मनुष्य मात्र के १० नियम; जिनकी व्याख्या पुस्तक के अन्त में उपदेश नामक लेख में की गई है; के अनुरूप कार्य भी कराया इन में मनुष्यो के सुख शान्ति के साधन छुपे हैं।

श्री महाराज जी ने अन्त में जन कल्याण के लिये आदेश दिया कि इन १० नियमों व ८ उद्देश्यों के पालन में यदि मनुष्य असफल हो तो भगवान से प्रार्थना करे कि हे ईश्वर मेरी बुद्धि को प्रेरणा करो और धर्म, अर्थ काम और मोक्ष में लगावें - यह आदेश गायत्री में

निहित है जिसे आपने लाखों की संख्या में छपवा कर मुफ़्त बटवाया और वह आप आश्रम से प्राप्त कर सकते हैं ।

सम्वत् १९१८ से श्री महाराज जी रामपुरा आश्रम निर्माण में लगे रहे। इससे पूर्व जब आप जींद आते बनखण्डी पर ठैरते और बीड़ में घूमने जाते थे। एक दिन भक्त किशनलाल, पं० मोहनलाल व अन्य भक्तों के साथ इस भूमि पर खड़े होकर कहा कि यह जगह आश्रम बनने के लायक है फिर भ्रमण करते रेवाडी चले गए भक्त किशन लाल ने वह जमीन खरीद ली और रेवाडी जाकर निवेदन किया कि वह जमीन आश्रम के लिए खरीद ली है अब वहां आश्रम बनना चाहिए । आपने स्वामी भावानन्द को आदेश दिया कि तू वहां जाकर बैठ जा फिर हम भी वहां आवेंगें । भावानन्द ने यहां कुआ, गुफा, ऊपर एक कुटी और एक कुटी और, अपने हाथ से बनाई । कई बड़, पीपल, नीम भी लगा दिए । १९३२ में रेवाड़ी आश्रम का विशाल सत्संग भवन तैयार हो गया और आश्रम हर प्रकार से पूर्ण हो गया जींद के भक्त जींद पधारने की प्रार्थना करते थ । आप का चित्त कुछ उपराम सा हो गया और जींद आश्रम निर्माण का ध्यान करने लगे । ला० सीता राम, भक्त किशनलाल आदि की प्रार्थना पर आप १९३५ में कार्तिक शु० १३ को जींद पधारे । कुटी के पास ठहर कर आप बनखण्डी आ गए । ढींगरा चीफ मिनिस्टर की आज्ञा से

कौल साहब व सीताराम जज ने यहाँ पर सरकारी टैंटो का सुप्रबन्ध कर दिया। खूब सत्संग रहने लगा। घासी राम, रुली राम व भक्त किशन लाल ने श मलात जमीन व सीताराम ने अपनी कुछ जमीन अर्पण कर दी सैंकड़ो आदमी सरोवर व कुण्ड की मिट्टी छांटते थे। मकान बनने लगे आप यहां २-३ मास ठहरे। रेवाडी के आश्रम वाले बड़े व्याकुल हो गए। राव साहब व भूमानन्द प्रार्थना व आग्रह करके आप को केवल १५ दिन के वास्ते रेवाडी ले गए, जाते हुए रामानन्द जी से कहा कि तुझे तो यहीं रहना है। यहां पर म. सत्यानन्द विशुद्धानन्द आदि भी आकर रहने लगे। जींद वापस भेजने मे राव साहब व भूमानन्द अनेक विघ्न बाधा खडी कर देते और जींद वापस नहीं आने दिया। ग्रीष्म ऋतु मे शिमले ले जाने लगे। आप ऊपर से पलंग सहित आते हुए "राम २ सत्य है" सत्य बोलो गत है स्वयं कहने लगे और दूसरों से भी कहलाया और बोले कि रुपया का रुपया खरच रहे हो और आदमी का आदमी खो रहे हो किसी की कुछ समझ मे नहीं आया कि क्या लीला है। शंकरानन्द ने पूछा कि महाराज कब आओगे, तो बोले जिन्दा रहेंगे तो आवेंगे। शंकरानन्द को तो विश्वास हो गया कि महाराज वापस नहीं आवेगें। शिमले कुछ दिन पश्चात जाखू, धौल पुर हाऊस में कुछ व्याधि भी हो गई थी और आपने शरीर त्याग का संकल्प कर लिया और २७ दिन निराहार, केवल पानी के ऊपर, रहे

उस समय आपने "लहरा रही है ज्योति" का पद बनाया २ दिन पहले आप ने नाम लेकर बुलाना भी बन्द कर दिया केवल भैया पानी व माँ पानी कहते थे। अन्तिम समय तक, २७ दिन निराहार रहने पर भी आप का चेहरा दिव्य तेजोमय दीख पडता था। वहाँ हाहाकार मचन लगा सब उच्च स्वर से रुदन करते और चिल्लाते थे, आप ९ जुलाई १९३६ को शाम के ८ बजे बडी शान्ति से अपन रूप में लय हो गए। और हम सब को रोते विलखते निराश्रय छोड गए। हमें तो गोपियों की कृष्णवियोगलीला का साक्षात अनुभव होता था उस विरह वेदना मे महीनों उत्साह हीन कि-कर्तव्य विमूढ रहे। वर्षों पीछे मुख्य २ व्यक्तियों ने जी द की सुध। और शंकरानन्द, सेवानन्द जी ने म० रामानंद के साथ आश्रम निर्माण आरम्भ किया। भिक्षा वृत्ति अनथक शारीरिक परिश्रम व घोर तपश्या द्वारा बडी छोटी सभी सड़कें बनाई। वृक्ष लगाए, आम नोम्बू के बाग बनाए, मकान, मन्दिर भी बन गए, गऊशाला भी चल पड़ी, खेती के लिए भूमि भी ले ली गई और नहर व ट्यूबवेल द्वारा सिंचाई से २० वर्ष पश्चात यह अब स्वतत्र स्थिति को प्राप्त हुआ है यह सब पूज्य महाराज जो की अन्तिम इच्छा व प्रेरणा का फल है यहाँ के आप सब का कर्तव्य है कि उनके बताए "मनुष्यों के १० नियम और आश्रम के आठ उद्देश्यों" का पालन करके अपना जीवन सफल करें।

ॐ शंकरोन् शंकरः

१. वन्दना

नमो २ परमात्मन् पार ब्रह्म प्रभु नमो नमो ।।टेक।।
नमो नमो हे जग के स्वामी नमो नमो
हरि अन्तर्यामी, विश्वपते विश्वात्मन ।।१।।
नमो नमो हे लीलाधारी, अद्भुत लीला देव
तुम्हारी, जगत्पते जगदात्मन ।।२।।
नमो नमो हे करुणासागर नमो नमो हरि गुण गण
आगर, अखिलेश्वर अखिलात्मन् ।।३।।
नमो नमो हे आनन्द कँदा, नमो नमो प्रभु परमानन्दा
प्रणवऊं सत् चित् आत्मन् ।।४।।

२

नमो २ गरुदेव दयामय परमानन्द उदार ।।टेक।।
शान्त अनीह अनामय निर्गुण निर्मल ज्योति अपार ।।१।।
भव भय भंजन जन मन रंजन गंजन दुरित विकार ।।२।।
जग के स्वामि अन्तरयामि, दया प्रेम भंडार ।।३।।
शक्ति ज्ञान आनन्द प्रेम की बरसो अमृतधार ।।४।।
दर्शन मंगल देव तिहारे दिव्य रूप आकार ।।५।।

१. महिमा

गुरूजी म्हारे पूर्ण परमानन्द ।।टेक।।
समदृष्टि और शीतलताई जैसे पूरण चन्द ।।१।।
रहनी अगाध न जानी जाय कहत सुनत कटें फन्द ।।२।।
जहा २ जांय होत मुद मगल नाशत सब दुःख द्वन्द ।।३।
जीव उभारण देह धरि आये सद्गुरु आनन्द कन्द ।।४।।
गुरु गोविन्द जो दो कर जाने सूझत नहीं शट अन्ध ।।५।।
भवानंद जहां द्वैत न भासै वहाँ गुरु परमानन्द ।।६।।

२

हमारे गुरु ने ज्ञान गठड़िया खोली।। टेक।।
उत्तराखण्ड आदि से लाये कई वस्तु अनमोली ।
कुरुक्षेत्र कश्मीर भ्रमण कर धर कांटे पर तोली ।।१।।
केसर क्षमा सुमति कस्तूरी दया सुगन्धित रोली ।
सत रूपी गोरोचन इसमें भक्ति विजिया घोली ।।२।।
लख सद्गुरु का लक्ष श्रवण सुन उनकी मधुरी बोली ।
ग्राहक आये दूर दूर से बांध बांध कर टोली ।।३।।
कई अजान पुरुष परदेशी कई हमरे हम जोली ।
सबको मिला प्रसाद भजन का जिन कि न श्रद्धा डोली ।४।।
कई एक सत्पुरुषों की थोड़े में ही तृप्ति होली ।
गुरु कृपा से यह जन मोहन लायो भरकर झोली ।।५।।

३

उनके सत्संग में जब भी हम जाते थे ।।टेक।।
मीठी वाणी से सत्कार करते थे वो,
करुणा दृष्टि से चिन्तायें हरते थे वो ।
भाग दिल से हमारे सारे ग़म जाते थे ।।१।।
कैसा अद्भुत विलक्षण था उनका कथन,
शान्त हो जाते वहां जाके हम सब के मन ।
भाग द्विविधा भरम एक दम जाते थे ।।२।।
प्रबल युक्तियां थी मनोहर बचन,
उनके उपदेश से भगवत में लगती लगन ।
शब्द सद्गुरु के नस २ में रम जाते थे ।।३।।
करते हरीकीतन खुद कराते हमें,
शब्द द्वारा अलख को लखाते हमें ।
घन की नाईं बरस करके थम जाते थे ।।३।।
परोपकार सम्बन्धी जो होती बात,
उसको स्वीकार करते थे तज पक्ष पात ।
ऐसी बातों पर फौरन ही जम जाते थे ।।४।।

करते निन्दा किसी की न स्तुति बड़ी,
शान्त और मग्न रहते थे वो हर घड़ी।
मोहन खण्डन के मार्ग में कम जाते थे ॥५॥

४

रात दिन रहते मगन आनन्द के वो बीच में।
और सब को रखते थे आनन्द के वो बीच में ॥ टेक ।
भोर ही उठ कर के वो ओंकार धुनि उच्चारते।
और फिर हर हर महादेव दिव्य नाद गुंजारते ॥
उस समय होते अति आनन्द के वो बीच में ॥ १ ॥
धुन सुनत ही तुरत हम सब दर्शनों को दौड़ते ।
न्हाते धोते भागते सब काम पीछे छोड़ते ।
दर्श कर हो जाते तब आनन्द के हम बीच में ॥ २ ॥
उन का एक अद्भुत निराला दिव्य ही सत्संग था ।
रात दिन हरि कीर्तन नित बरसता हरि रंग था ॥
जिस से रहते थे सभी आनन्द के हम बीच में ॥ ३ ॥
हर समय दंगल वो मंगल नित्य हरि गुण गान था।
उन को हम सब का निरन्तर प्रेम था और ध्यान था ॥
इस से रहते थे सदा आनन्द के हम बीच में ॥ ४ ॥

परम पूज्य श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज का दिव्य महिमा का गुण गान महात्मा कृष्णानन्द जी "सत्यं शिवं सुन्दरम्, आनन्द स्वरूप, योगी, दाता, शान्त व क्षमा स्वरूप" द्वारा वर्णन करते हैं और अपना अनुभव बताते हैं कि जो आदमी बुरी नीयत से उन के अत्यन्त प्रिय काम परोपकार में भी बाधा डालने के लिये कोई पदार्थ मांगने आया तो वह भी उस को आते ही एक बार को

ही प्रार्थना पर दे दिया। प्रेम स्वरूप, सर्वस्व त्यागी थे। आप सदा ब्रह्म लीन स्थिति में रहते थे और सबको आनन्दित रखते थे।

देवकी माई लिखती हैं—कि श्री महाराज जी वशिष्ट व संदीपन मुनि की कोटि के एक ब्रह्म ऋषि थे आप को गायत्री मंत्र अत्यन्त प्रिय था आपने स्त्री पुरुष, बच्चा, द्विज, शूद्र, मुसलमान ईसाई आदि सब को इस का समान अधिकार दिया, और उपदेश दिया कि इस मंत्र के बराबर कल्याणकारी और कोई मंत्र नहीं-यह वही मंत्र है जिसको इर्षा व अज्ञान-वश पण्डितों ने अपने लिये छुपा रखा था। इसे लाखों की संख्या में छपवा कर मुफ्त बटवाया। उनका लक्ष्य था कि अधंकार में पड़ी बीमार हिन्दु जाति का सुधार और कल्याण हो और पद-दलित स्त्री जाति बुढ़िया पुराण की पद्धति और रूढ़ियों के बन्धन से मुक्त हो जावे और प्राचीन गौरव फिर प्राप्त करे-पहले स्त्री के नाम वाली **"गौरी शंकर सीताराम राधेकृष्ण श्यामाश्याम"** आदि कीर्तन ध्वनि कराते थे इस प्रकार शिक्षा और ज्ञान का प्रचार वेदानुकूल प्रत्यक्ष रूप से प्रसारित किया।

माई शिवानन्दी कहती हैं—वे तो ब्रह्मलीन महापुरुष थे उनकी माया अपार थी कहने सुनने में नहीं आ सकती। उनका तेज दिव्य था बड़े-बड़े ऋषि महात्मा उनके चरणों में सिर झुकाने आते थे। यह देखकर आश्रमवासी हैरान हो जाते थे। मैंने किसी का भी ऐसा अपार तेज नहीं देखा, उनकी चमक और दमक और उनकी ज्योति के भाव हम सब आश्रम वासियों के हृदय पर अंकित है। अन्त तक शरीर की कान्ति में किंचित भी फरक नहीं हुआ, दो दिन पश्चात फोटो लेने पर भी ऐसा दिखाई देता था कि परमानन्द रूप नींद में सो रहे हैं।

च-झ और २१-५२ पृष्ठ, रायसीना प्रिन्टरी, दिल्ली-६ में मुद्रित

ॐ तत्सत्

ब्रह्मीभूत श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज

ब्रह्मलीन परमहंस श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज को स्वस्वरूप में समाए आज ३२ वर्ष हुए हैं उनकी अलौकिकता की दिव्य अनुभूति यही है कि प्रत्येक भक्तजन अब भी उनको अपने निकट ही अनुभव कर रहा है आप कौन थे क्या अवस्था थी कहां कहां तपस्या की व विचरण किया, यह सब आज तक कोई भी नहीं जान पाया। कभी कभी अपने मौज में बतला देते थे। यही, कि हम काश्मीर के पहाड़ों में से पठानकोट कुल्लू आदि होते हुए पहाड़ों के साथ साथ गुरदासपुर, होशियारपुर, अमृतसर आदि स्थानों मे भ्रमण करते रहे १४ वर्ष पूर्व एक बार हरिद्वार मे हम जगलों में नग्न रहा करते थे। पानी न मिलने पर बाहर निकले तो हाली लोग पतले, लम्बे, काले, नगन मूर्ति को भूत समझ कर भाग गए उनमें से एक बूढा आदमी पास आया हमने उससे कहा कि हम तो साधू हैं प्यास लगी है पानी चाहिए। फिर उन्होंने हमें पानी पिलाया और एक चादर उढा दी। वहां लंढौरा स्टेशन के सामने राजपूतों के गाँवों में ४ साल तक

भ्रमण करते रहे फिर अम्बाले की तरफ चले गए । १९१२ में यह बात म०दयानन्द जी को गाड़ी में बताई थी

श्री १०८ महाराज जी सबसे पहले स. १९८३ (सन् १९०६) में घूमते घूमते जीद स्टेशन पर लाइनों के परे फूस की झौपड़ी में एक मास ठहरे । तुलसीराम रेलवे स्टोर मुन्शी आदि सेवा करते थे । सत्संग करके जाना कि ये तो कोई महापुरुष है मामूली साधू नहीं । यह कोई नहीं जान सका कि ये कौन है कहाँ से आए हैं ? जीन्द से राम रिखा सरिश्तेदार व बनवारी लाल ठेकेदार आदि सत्संग करने आते थ । बनवारी लाल ने अपना एक आदमी उनकी सेवा में छोड़ दिया । वहां से आप गोदावरी कुम्भ पर चले गए तलवे में कङ्कड़ चुभने से पैर पर वरम हो गया । वापसी में छोटी लाइन से नारनोल रेवाड़ी गुड़गाँव ठहरते हुए आप पालम उतरे । स्टेशन पर मुन्ना लाल स्टेशनमास्टर गाँव के शिवालय में छोड़ आया । कल्लू खाती और यादराम (म० दयानन्द) सेवा करते थे । बहुत आदमी प्रेम श्रद्धा से आने लगे । दर्शको की भीड़ होने लगी । बड़े बड़े आदमी उनके सत्संग में आते और सत्सङ्ग उपदेश से मोहित होकर सेवा करते थे । कई बहुत घटनाएं देखने में आई । सब कहते थे कि

सन्त व सिद्ध पुरुष हैं फिर आप भिवानी चले गए १९०६ में फिर जीन्द धर्मशाला में, सफीदों वालों के कारखाने में ठैर कर बनखण्डी पर आ गए। अयादास सेवा करता रहा। शहर के भक्तों की भीड़ लगी रहती थी। खूब सत्संग रहने लगा। राजा साहब के चचा भी सत्संग में आये। बडे प्रभावित हुवे संगरूर चलने की प्रार्थना की। आप बहादुरगढ,सांपला,असौदा,नजफ़गढ बेरी भमण करते पालम पहुचे। १९०७ में आप नरेला पधारे फिर जीन्द गौशाला पर ठहरे। वहां जीन्द महाराज ने दर्शन किये बडे प्रभावित हुवे कहा कि सन्त तो दुनिया में लम्बे बाबा हैं। महाराज जीन्द ने अपनी गाडी भेजकर सत्कार पूर्वक अपनी कोठी पर ठहराया। वहां श्री १०८ महाराज जी ने उन को राजनीति पर दिव्य उपदेश किया वे सब बहुत प्रभावित हुवे। अहलकार लोग भी जान गये और वे संगरूर ले गये। वहाँ जीन्द महाराज के चाचा हरचरण के बाग में रहत रहे अपना सिपाही रामप्रताप (म० प्रतापानन्द) को सेवा में छोड़ दिया खाने पीने व रुपये का प्रबन्ध कर दिया। आप फिर जीन्द बनखण्डी ठहरते हुवे रामह्रद सूरज कुण्डी लक्षी देवी के मन्दिर ठहरे वहां से बीड घूमने

नित्य जाते थे भक्त सत्संगी इन्हे ढूंढने जाते थें। सत्सग करते और उपदेशों से आनन्दित होते। चन्दूलाल की धर्मशाला व हरसरूप की हवेली में भी रहे। भोला राम ईगरा वाले जो चिनाई का काम करते थे सत्संग करते और शब्द वाणी गात थे। फिर वे भवानन्द साधू बन गये। आपने जीन्द आश्रम में गुफा और उसके ऊपर एक कोठा अपन हाथ से बनाया इस प्रकार श्री महाराज अपनी अलौकिक लीला सत्सङ्ग से सबको आनन्दित करते रहते। १९०७ में आप नरेला भी गये म० नारायण दत्त ने बड़ी सेवा की। फिर १९०९ में पानीपत पं० लक्षमणदत्त को दर्शन दिये वहां बोली शाह कलन्दर पर जाते थे। साइयों ने कहा आप भी कुछ सुनाओ। अगले दिन आपने ‡ "सातो रंग निरखता" का ख्याल बनाकर सुनाया और समझाया। साई बोले भई यह तो कोई औलिया है बड़ी श्रद्धा हो गई और आप वहाँ से चल दिये।

म० नारायण स्वामी लिखते हैं :—

मैंने प्रथम बार सम्वत् १९५५ (सन् १८९८) में श्री १०८ स्वामी जी महाराज की बाबत लोगों से सुना था कि एक

‡ यह यौगिक सिद्धियों को प्रकाशित करने वाला महान् पद आश्रम की सत्यशब्द संग्रह में पूर्ण रूप से मिल सकता है।

सन्त जि० अम्बाला के दीनारपुर और बाजीदपुर ग्राम में ठहरे हुए हैं। उस समय श्री महाराज जी केवल दुग्ध पान करते थे। बजीदपुर में एक मौलवो श्री महाराज जी के सतसंग में जाता था। उससे लोग पूछा करते थे कि यह कैसे महात्मा हैं? मौलवी साहब यह उत्तर दिया करते थे "यह तो औलिया (महापुरुष) हैं"

सं० १९५७ वि० (सन् १९००) में श्री महाराज जी जगाधरी में लश्करों की धर्मशाला में ठहरे हुए थे। वहां रतनलाल हलवाई श्री महाराज जी की सेवा करता था। उसको श्री महाराज जी ने हनुमान जी का जीवन चरित्र सुनाया था।

सं० १९६४ (सन् १९०७) में बवाने ग्राम का धन्ना वैश्य श्री महाराज जी को नरेला लाया। श्री महाराज जी वहां तालाब पर ठहरे। कबूल ब्राह्मण वहां श्री महाराज जी की सेवा करता था। कबूल ब्राह्मण ने मुझ से जिकर किया कि तालाब पर एक सिद्ध महात्मा ठहरे हुए हैं उनके दर्शन करने चाहिए। वह सन्यासी महात्मा हैं, और सिद्ध पुरुष हैं, दर्शन करने योग्य हैं, उनके दर्शन से मनुष्य के पाप कट जाते हैं। उसकी प्रेरणा से मैं दर्शन करने गया और श्री महाराज जी के दर्शन करने से मेरे चित्त को बड़ा आनन्द और शान्ति प्राप्त हुई और मैंने यही अनुभव हुआ कि मेरे पापों का क्षय हुआ है। श्री महाराज जी ने अपने अतुल्य प्रेम मेरे चित्त को आकर्षित कर और मेरी यह भावना होने लगी कि मैं हर समय इनके दर्शन करता रहूं। वहां श्री महाराज जी शरद् ऋतु में रहे। मैं साधारण तौर पर सेवा करता रहा परन्तु सन्तोषजनक सेवा करने में असमर्थ रहा।

श्री महाराज जी रात के दो दो बजे तक सत्संग करते रहते थे

भजन, शब्द और उपदेश होते रहते थे। उन दिनो 'सिया रघुवीर भगोसो ऐसो" और "लज्जा मोरी राखो न श्याम हो" यह दो भजन विशेष कर गाते थे और जब यह भजन गाते थे तो सारे सत्सगियों को रुला देते थे और आप भी रोने लगते थे। श्री महाराज जी उन दिनों में भी अछूतों से बहुत प्रेम करते थे। शरद् ऋतु बिता कर श्री महाराज जी ब्रज का नाम लेकर वहां से चले गए।

श्री महाराज जी ब्रज से लौटकर पालम आए। पालम से नरेले आए और वहां कुछ समय रहकर संगरुर की तरफ चले गए। सं० १९६६ सन् (१९०९) में श्री महाराज जी फिर श्रावन मास में नरेले आए और स्टेशन पर नन्दी को धर्मशाला में ठहरे। वहाँ एक दिन कहने लगे कि श्रावण मास है पूड़े बनने चाहिय। रात के दो बजे पूड़े बनने लगे। पूड़े बनाते बनाते सवेरे के पांच बज गये। श्री महाराज जी ने फरमाया कि शौच स्नान से निवृत्त होकर प्रसाद पाओ। सब लोग निवृत होकर श्री महाराज जी के पास आ गये। श्री महाराज जो स्वयं भी प्रसाद पाने लगे और सब लोगों को प्रसाद बंटवा दिया। श्री महराज जी ने सबको अपने पास ही बिठा लिया। प्रतापसिंह जिसको श्री महाराज जी ने बाद में संन्यास दे दिया और अब प्रतापानन्द के नाम से मशहूर है श्री महाराज जी को पूडे देता जाता था और श्री महाराज जी पाते थे, साथ ही साथ महाराजजो उपदेश भी दे रहे थे। बीच में ऐसा दृश्य उपस्थित हुआ कि पं० प्यारेलाल ने एकाएक लोगों से पुकार कर कहा कि तुम लोग श्री महाराज जी के चेहरे की तरफ देखो। सब ने बड़े ध्यान से चेहरे की तरफ देखा। महाराज जी की आंखें खुली हुई हैं और पलक झपती नहीं हैं। भोजन भी कर रहे हैं और बातें भी करते जाते हैं। पं० प्यारेलाल ने कहा

श्री महाराज जी मन से सो रहे हैं, वाणी से बोल रहे हैं और मुख से खा रहे हैं। यह दृश्य देखकर सब आश्चर्य करने लगे। इतने में प्यारेलाल ने श्री महाराज जी के पाँव को छुआ। श्री महाराज जी एक दम चौंक पड़े और बोले कि हम तो मो ही गए थे। उस दिन श्री महाराज जी ने बड़े प्रेम से प्रसाद पाया।

२- पं० केदार नाथ शास्त्री आपके और आश्रम के विषय में लिखते हैं वास्तव में यदि ब्रह्मचारी की अवस्था किसी ऐसे वायुमंडल में व्यतीत हो कि जहां वानप्रस्थी और संन्यासियों की संगति हो और ईश्वर की भक्ति की ध्वनि उसके कान में पड़ती रहे, जिससे वह गृहस्थाश्रम में जाने पर उत्तमाश्रमों में जाना न भूले, ईश्वरोपासना को अपने जीवन का उद्देश्य समझे तो अधिक से अधिक सुधार की आशा हो सकती है।

मैंने तो जिस दिन प्रथम बार श्री भगवद्भक्ति आश्रम के तथा आश्रमाध्यक्ष श्री महाराज जी के दर्शन किये मेरी आत्मा में आनन्द का पारावार न रहा। ज्योंहि मैंने प्रवेश किया आश्रम वासी जन से § ॐ ॐ जय श्री कृष्ण द्वारा

---

§ सन्यास आश्रम देहली से एक महात्मा आश्रम पधारें - ॐ ॐ से अभिवादन सुन कर बडे चकित हुये और बोले इस दिव्य आश्रम से तो प्राचीन ऋषियों के आश्रमों का अनुभव होता है और ॐ तो ब्रह्म का एक मात्र पवित्र और गुप्त नाम है " वेद्य पवित्रमोंकार ऋक सामयजुरेवच " कोई सन्यासी व मण्डलेश्वर भी इसका उपदेश जनसाधारण को नही करते। ये तो कोई महापुरुष थे जो कि खुल्लमखुल्ला ॐ ॐ से अभिवादन कराने की सामर्थ्य रखते थे फिर बडे प्रसन्न हो कर ३/४ दिन स्वयं भी माण्डूक्योपनिषद से ॐकार की व्याख्या करके सबको आनन्दित किया।

कृतार्थ हुआ । आश्रम में उत्तमोत्तम वृक्षों की पंक्तियां देखी जिनके दर्शन मात्र से सतोगुण की उत्पत्ति हो गई, यत्र तत्र कुटीरों में ब्रह्मचारीयों तथा वानप्रस्थियों के झुण्ड देखे जो अपने अपने आश्रमानुसार कर्तव्य पालन में तत्पर थे । बटुक पाठशालाओं में हिन्दी संस्कृतादि विद्याओं का उपार्जन कर रहे थे । बालिकायें भी कन्यापाठशाला में शिक्षा प्राप्त कर रहीं थीं । वानप्रस्थी वैराग्य का अनुभव कर रहे थे । मैंने आश्रम वासियों के कृत्यों को देख सतोगुण का स्मरण किया । उस समय मेरी आत्मा ने उस शुद्ध स्वरूप सच्चिदानन्द का अनुभव किया इसके पश्चात् एक ब्रह्मचारी द्वारा मैं भी पूज्य श्री महाराज जी के समीप भगवत्प्रेम भवन में पहुँचाया गया । वहां मैंने साक्षात् जीवन्मुक्ति को ही विराजमान पाया । भगवद्भक्ति परिपूर्ण भजनों की झड़ी लगी हुई थी । उस समय श्री महाराज जी की विशाल मूर्ति को देख कर मे आश्चर्यान्वित रह गया कि मैंने अपने जीवन में ऐसे दिव्य स्वरूप के दर्शन कभी न किये थे । नाभि पर्यन्त श्वेतश्मश्रू आजानुबाहुओं तथा विशाल एवं ओजस्वी नेत्रों से यही समझा कि ये मनुष्य रूप मे कोई देवता है । कुछ देर के लिए मैं भी उस समूह के साथ ही भगवत्प्रेम में प्रवीन हो गया और अपने आप को भूल गया । इसके पश्चात् श्री महाराज जी को साष्टांग अभिवादन करके भवन मे बाहर निकला भवन में कोई आता था, कोई जाता था, किसी

प्रकार का बन्धन न था। आश्रम के मध्य में मैंने बड़ा रमणीक सरोवर देखा। जिसमें से जल ले जाकर सब आश्रम वासी अपने २ निवास स्थान पर इस का प्रयोग करते थे। सरोवर पर किसी प्रकार की अशुद्धता बिल्कुल न थी जल सर्वथा पवित्र था। आश्रम में बालक, बालिकायें, वृद्ध, वृद्धायें, युवक युवतियां प्रत्येक अवस्था के मानव विचरण करते थे। किसी प्रकार का किसी को भी भय न था। स्वतन्त्रता का सर्वथा साम्राज्य था। वहां पर मैंने गौशाला में बड़ी बड़ी नसल की गौवें भी देखी बटुक जिनकी सेवा करते थे।

जब आश्रम में जाकर मुझ सांसारिक मनुष्य को भी भगवदानन्द का इतना अनुभव हुआ और मेरे हृदय पर सद् विचारों ने अधिकार कर लिया। तो मैंने अनुमान लगाया कि जो यहां रात्रिदिवस निवास करते हैं उनके आनन्दानुभवका क्या ठिकाना है? वास्तव में श्री महाराज जी अपने शुभ कार्य में सफल हुए और उनकी महान् आत्मा ने एक महान् कार्य कर दिया। भगवद्भक्ति के वायु मण्डल में रह कर शिक्षा पाते हुए बालक तथा बालिकायें अपने अपने जीवन को उच्च बनाने में अवश्य सफल होंगे। उस दिवस से लेकर मैं यदा कदा आश्रम तथा महाराज जी के दर्शनों से अपनी आत्मा को पवित्र करता रहा। वास्तव में उनकी महान् आत्मा ने हम लोगों के ऊपर बड़ी कृपा की है। मुक्ति प्राप्त करने के उत्तमोत्तम प्रकारों का व्याख्यान किया है। ब्रह्मचर्य द्वारा बालक बालिकाओं की शिक्षा प्राप्ति का एक आदर्श उपस्थित कर दिया है। आजकल के हाई स्कूलों में बच्चों की शिक्षा प्राप्ति का एक आदर्श उपस्थित कर दिया है। आज कल

परम पूज्य श्री महाराज जी ने अपनी असीम उदारता से इस पवित्र इच्छा (प्रार्थना) को न टाल कर आदेश किया। यह पवित्र और उपयोगी संस्था, जिनकी सीमा बहुत विस्तृत भूमि में फैली हुई हैं वास्तव में स्वर्गीय उद्यान का नमूना है, और इसमे ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियों के पालन-पोषण तथा शिक्षा सम्बन्धी कई संस्थाओं और सत्संग भजन कीर्तन और कन्या आदि के लिये कई सुन्दर और विशाल भवन और शालायें हैं। आश्रम के मध्य में राम सरोवर नामी सरोवर है। वहां से एक उच्च कोटि का मासिक हिन्दी पत्र "भक्ति" निकलता है। इस आश्रम में बड़े उच्च व्यक्ति, साधु संन्यासी गृहस्थी महानुभाव, अफसर, सेठ, पादरी और दूसरे पधारा करते है।

परम पूज्य श्री महाराज जी ने सन् १९३० में शिमले आना शुरू किया और वे हर साल गर्मी के मौसम में शिमला रह कर सत्संग हरि कीर्तन और भजन प्रतिदिन बड़ी धूमधाम से करवाते थे और बहुत सार गर्भित उपदेश दिया करते थे और भ्राताओं का बड़ी बड़ी मण्डलियों को प्रार्थना विशेष रूप से गायत्री के जाप और गीता वेद आदि के पाठ के प्रभाव को जतला दिया करते थे। अर्थ सहित गायत्री मंत्र की छोटी २ पुस्तकों को मुफ्त बटवाया करते और इस मंत्र को सत्संग में सारे सत्संगियों से बड़े उच्चस्वर से बाजे और तबले के साथ गवाया करते थे। शनिवार को रात्रियों में रतजगे करवाते और सारी रात बड़ी २ कीर्तन मण्डलियों से हरि कीर्तन करवाते थे कि हिंदु जनता के मन पर और खास कर उन नवयुवकों के मन पर

प्रकार का बन्धन न था। आश्रम के मध्य में मैंने बड़ा रमणीक सरोवर देखा। जिसमें से जल ले जाकर सब आश्रम वासी अपने २ निवास स्थान पर इस का प्रयोग करते थे। सरोवर पर किसी प्रकार की अशुद्धता बिल्कुल न थी जल सर्वथा पवित्र था। आश्रम में बालक, बालिकायें, वृद्ध, वृद्धायें, युवक युवतियां प्रत्येक अवस्था के मानव विचरण करते थे। किसी प्रकार का किसी को भी भय न था। स्वतन्त्रता का सर्वंग साम्राज्य था। वहां पर मैंने गौशाला में बड़ी बड़ी नसल की गौवें भी देखी जिनकी सेवा करते थे।

जब आश्रम में जाकर मुझ सांसारिक मनुष्य को भी भगवदानन्द का इतना अनुभव हुआ और मेरे हृदय पर सद् विचारों ने अधिकार कर लिया। तो मैंने अनुमान लगाया कि जो यहां रात्रिदिवस निवास करते हैं उनके आनन्दानुभवका क्या ठिकाना है? वास्तव में श्री महाराज जी अपने शुभ कार्य में सफल हुए और उनकी महान् आत्मा ने एक महान् कार्य कर दिया। भगवद्भक्ति के वायु मण्डल में रह कर शिक्षा पाते हुए बालक तथा बालिकायें अपने अपने जीवन को उच्च बनाने में अवश्य सफल होंगे। उस दिवस से लेकर मैं यदा कदा आश्रम तथा महाराज जी के दर्शनों से अपनी आत्मा को पवित्र करता रहा। वास्तव में उनकी महान् आत्मा ने हम लोगों के ऊपर बड़ी कृपा की है। मुक्त प्राप्त करने के उत्तमोत्तम प्रकारों का व्याख्यान किया है। ब्रह्मचर्य द्वारा बालक बालिकाओं को शिक्षा प्राप्ति का एक प्रदेश उपस्थित कर दिया है। आजकल के हाई स्कूलों में बच्चों को शिक्षा प्राप्ति का एक आदेश उपस्थित कर दिया है। आज कल

परम पूज्य श्री महाराज जी ने अपनी असीम उदारता से इस पवित्र इच्छा (प्रार्थना) को न टाल कर आदेश किया। यह पवित्र और उपयोगी संस्था, जिनकी सीमा बहुत विस्तृत भूमि में फैली हुई हैं वास्तव में स्वर्गीय उद्यान का नमूना है, और इसमे ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारीणियों के पालन-पोषण तथा शिक्षा सम्बन्धी कई संस्थाओं और सत्संग भजन कीर्तन और कन्या आदि के लिये कई सुन्दर और विशाल भवन और शालायें हैं। आश्रम के मध्य में राम सरोवर नामी सरोवर है। वहां से एक उच्च कोटि का मासिक हिन्दी पत्र "भक्ति" निकलता है। इस आश्रम में बड़े उच्च व्यक्ति, साधु संन्यासी गृहस्थी महानुभाव, अफसर, लाट, पादरी और दूसरे पधारा करते है।

परम पूज्य श्री महाराज जी ने सन् १९३० में शिमले आना शुरू किया और वे हर साल गर्मी के मौसम में शिमला रह कर सत्संग हरि कीर्तन और भजन प्रतिदिन बड़ी धूमधाम से करवाते थे और बहुत सार गर्भित उपदेश दिया करते थे और श्रोताओं का बड़ा बड़ी मण्डलिओं को प्रार्थना विशेष रूप से गायत्री के जाप और गीता वेद आदि के पाठ के प्रभाव को जना दिया करते थे। अर्थ सहित गायत्री मंत्र की छोटी २ पुस्तकों को मुफ्त बटवाया करते और इस मंत्र को सत्संग में सारे सत्संगियों से बड़े उच्चस्वर से बाजे और तबले के साथ गवाया करते थे। शनिवार को रात्रियों में रतजगे करवाते और सारी रात बड़ी २ कीर्तन मण्डलियों से हरि कीर्तन करवाते थे कि हिंदु जनता के मन पर और खास कर उन नवयुवकों के मन पर

कि जिन पर चटकीली भड़कीली पाश्चात्य सभ्यता की कलई चढ़ी होती और जिनके विभाग में फैशनेबल सांसारिक विचारों का धुंधा भरा रहता धर्म सेवा, सहिष्णुता और मानसिक पवित्रता का रंग चढ़ जावे। आपने कई भक्तों की सच्ची प्रार्थना पर परम पूज्य श्री महाराज जी ने कृपा दृष्टि की और देश की ग्रीष्म राजधानी में अर्थात् शिमला में सन् 1933 में सत्संग सभा की नींव डलवाई कि जिसने अपने छोटे से तीन साल के ही अस्तित्व में परम पूज्य श्री महाराज जी की संरक्षता में एक बड़ी दृढ़ संस्था का रूप धारण किया। जिसके सेवक सहायक हिन्दू जाति में प्रसिद्ध बड़े २ नेता और महानुभाव हो गए जिसके लगभग सौ मैम्बर हैं जो भिन्न २ जातियां समाजों और विचारों वाले हैं जहां हरिकीर्त्तन, श्रीमद्भगवद्गीता की कथा, भजन आदि प्रायः बड़ी धूमधाम से हुआ करते हैं।

परम पूज्य श्री महाराज जी की सेवार्थ महाराजाधिराज श्री महाराजा धौलपुर ने अपनी श्रद्धा और भक्ति के प्रकाशन में अपनी शानदार सजी सजाई शाही कोठी जो कि जाखू की चोटी पर है, दे दी कि उसमें श्री महाराज जी विराजें और उनके श्रद्धालु भक्त साधू सज्जन महात्मा लोग आवें और श्री महाराज जी के सत्संग का लाभ उठावें।

श्रीमद् भगवद् भक्ति आश्रम रामपुरा रिवाड़ी के नमूने पर और उसके ही उद्देश्यों को लक्ष्य में रखकर पिछले साल परम पूज्य श्री महाराज जी ने जींद में भी रियासत तथा रियासत के बड़े २ अफसरों की संरक्षता में एक आश्रम खुलवाया। इस समय वह

अब श्रम सावधानी से उन्नति के पथ पर गम्भीर गति से जा रहा है।

धार्मिक संस्थाओं के स्थापन करने के साथ ही साथ परम पूज्य परम हंस श्री महाराज जी बडे भिन्न २ ठिकानों पर मेले करवाते कि जहाँ पर आंखों की सब बिमारियों का इलाज होता और जहां पर देश के बडे २ प्रसिद्ध सिद्धहस्त चतुर और आंखों के विशेषज्ञ डा० महाराज जी की सेवा में मोगा आदि दूर २ स्थानों से पधारते और आंखों के आपरेशन करते। इन मेलों में दुःखी गरीब आदमी औरतें और बच्चों के गांव के गांव उमड आते और श्री महाराज जी से आंखों का दान लेकर प्रसन्न होते हुए वापिस जाते। इन मेलों में मोतिया बिन्द जैसे जटिल रोगों की शल्य चिकित्सा बडी सुगमता सफलता और सुभीते के साथ होती। गत वर्ष शिमले मे शान्ति कुटी पर जो मेला हुआ उसमें महारानी वायसरानी श्रीमति लेडी विलिंगडन ने पधार कर अपने आप को सौभाग्यवती समझा कि उनको भी श्री महाराज जी के दुर्लभ दर्शनों का लाभ प्राप्त हुआ। और अपनी कृतज्ञता अप्रकाशित न रखने के लिए सभा के नाम के साथ अपने नाम को जुडवाने में प्रसन्नता प्रकट की और श्री महाराज जी से आशीर्वाद मांगा। यह लेडी विलिंगडन बलाइन्ड रिलिफ मिशन शिमला के आस पास के प्रदेश चक्षु रोग पीडित गरीब पहाडियों की हर प्रकार से बडी सेवा कर रही है। श्री कुरुक्षेत्र पर ऐसे पवित्र महान मेलों में लगभग ५ हजार मनुष्य चक्षु रोगपीडित मालेरकोटला, पटियाला, जींद, नाभा रियासतों से और अम्बाला करनाल और हिसार जिलों से आए। वहाँ प्रायः सब रोगियों की आंखें अच्छी हो गई। परम पूज्य श्री महाराज जी ने कृपा की कि जब तक मेला हुआ, वे गीता भवन मे ठहरे और मेले के प्रबन्ध की देखभाल

और रक्षा करते रहे - कार्य कर्ताओं को प्रोत्साहित करते रहे और हरि कीर्तन और भजन करवाते रहे और उपदेश देते रहे। ३ और स्थानों पर मेले करने के बाद वे जून में अपनी भविष्य वाणी के अनुसार जो कि उन्होंने बहुत पहले की थी। जुलाई को संध्या समय धौलपुर हाउस में ब्रह्म में लीन हो गए।

4 - म० रामानन्द जी बयान करते हैं।

मेरी अवस्था जो मेरे सामने गुजर चुकी है उसके आदि में मेरा विचार था कि मैं किसी योग्य महात्मा की शरण लूं और अपने आप को इस संसार दुःख से उनके उपदेश द्वारा पार करूं। मैंने बहुत सन्त महात्माओं का दर्शन और सत्संग भी किया। मुझे साधु मात्र पर श्रद्धा थी, मेरा विश्वास था कि मुझे कोई महात्मा अवश्य मिलेंगे। मैं खोज में था और चाहता था कि हे ईश्वर तू अन्तर्यामी है और सब के मनोरथों को पूरा करता है जो तेरी खोज करता है तू उस को अवश्य मिलता है। जो तेरी राह बतलाने वाले हैं तू उनके द्वारा अपने भक्तों को अपने मिलने के रास्ते पर बुला लेता है यदि मेरे अन्दर तेरी सच्ची भक्ति है तो मुझे भी आप के भक्त और सन्त जन अवश्य मिलेंगे ऐसी भावना करते २ मुझे कुछ काल के अन्दर एक सन्त मिले उनके दर्शन से मुझे बड़ी शान्ति और हर्ष उत्पन्न हुआ। उनको मैंने अपने हार्दिक भाव प्रगट कर दिए, उन्होंने मेरे भावों को जानकर मुझ पर अनुग्रह किया। मैं चाहता ही था बस उनके उपदेश का मुझ पर असर हुआ और मैंने अपनी निकृष्ट अवस्था का परित्याग कर दिया। तदनन्तर उनके शिष्टाचार से मुझे

अन्त लाभ हुआ। उन्ही की प्रेरणा से मैं उस स्था। को प्र प्त हो गया कि जिस स्थान से उन्होंने दीक्षा ली थी। जो श्री भगवद्भक्ति आश्रम नाम से प्रसिद्ध है वह आश्रम श्री 1008 पूज्यपाद श्री महाराज जी के कर कमलों से स्थापित हुआ है। जिस आश्रम के अन्दर मनुष्य पशु पक्षी और अनेक जीव जंतु आज अपने जीवन को उन्नति के शिखर पर ले जाने का रास्ता बना रहे हैं जिसको देखकर क्या हिन्दू क्या मुसलमान क्या ईसाई सभी हैरान और आश्चर्य में रह जाते हैं और देश के भक्त जो बड़े २ लीडर नेता हैं उनको आश्रम देखकर पुराने जमाने के ऋषि महर्षियों की स्मृति हो जाती है और कहते हैं कि यदि देश की अवस्था कुछ सुधर सकती है तो ऐसे ही आश्रमों द्वारा सुधर सकती है। बड़े २ महानुभावों ने आश्रम को देखकर अपनी रायें भी लिखी हैं जिन पुण्यात्मा महाशयों ने पूज्य महाराज जी का एकबार भी उपदेश सुन लिया उनके हृदय पर बिजली के समान असर पड गया, क्या वह कभी उन उपदेशों को भूल सकते हैं। जिनका हृदय प्राणी मात्र को अपनाने के लिए उनको शुभ मार्ग पर लाने के लिए इतना उदार होना, इतना गम्भीर होना, कि जिसकी कोई थाह ही न पा सके। वह कभी किसी पर अप्रसन्न होना तो मानो जानते ही न थे।

मुझे जब से श्री पूज्य महाराज जी का दर्शनहुआ है। तब से मेरे हृदय में देश सेवा का भाव उत्पन्न हुआ है। देश की भलाई, प्राणी मात्र का हित करना, गोवंश की उन्नति का तरीका, वृक्षों के लगाने में प्रेम होना तथा सब के साथ मित्र भाव होना इत्यादि देवी

सम्पदा के गुणों का संचार मेरे हृदय में श्री महाराज जी के दर्शन और उपदेश से ही हुआ है। जिस समय श्री महाराज जी का उपदेश होता था उस समय जो कुछ भी उनके मुखारविन्द से शब्द निकलते थे। उन शब्दों का मानो साक्षात आकार ही बन जाता था। कारण यही विदित होता था कि उनके जो शब्द मुखारविन्द से निकलते थे वह भावपूर्ण होते थे अन्तःकरण में विलीन हो जाते थे हम सब के ऊपर उन की अनन्त दया थी, हमारे कल्याणार्थ उन्होंने किसी प्रकार की कमी नहीं रहने दी हमें उन्होंने सब प्रकार से सुयोग्य बना कर रास्ता बतला दिया है। अब यदि हम ही उनके बतलाए हुए रास्ते पर न चल तो हमारे ही दुर्भाग्य है।

अनेकों बार कई तकलीफ स्वयं लेकर दूसरों को सुख पहुचाया, ऐसे कई बिमारों को जीवन दान मिलना आदि घटनायें जिन लोगों के साथ हुई हैं उनको इस रहस्य का पूरा ज्ञान हैं। श्री महाराज जी अपने आपको कभी विशेष रूप से प्रकट नही होने देते थे, उनकी तितिक्षा, सहनशीलता और गम्भीरता का कोई अन्दाज नही लगा सकता था। श्री महाराज जी के चरणों में आकर कोई भी क्यों न हो जिसने भी कुछ प्रार्थना की उसकी प्रार्थना अवश्य ही सुनते थे और यथा योग्य उसकी बात पूरी कर देते थे। क्या नीच क्या ऊंच सबके लिए श्री महाराज जी के हृदय से करुणा का श्रोत बहा करता था। अधिकतर आश्रम में ऐसे ही बच्चों का पालन और शिक्षण हुआ है कि जिनका आगे घर से कोई प्रबन्ध हो ही नही

सकता था । उनको आश्रम में रख कर बलवान ब्रह्मचारी स्वावलम्बी और परोपकारी बनाने के लिये नित्यप्रति उपदेश और सत्सङ्ग कराते थे उनकी तृप्ति के लिए आने वाले यात्रियों से भण्डारे कराते थे। यह भण्डारा उन अनाथ बच्चों के लिये ही कराया जाता था जिनको कभी अपने घर पर खाना तो क्या देखने को भी नही मिलता था। उन अछूतों के बच्चों को जो विद्या पढ़ना जानते ही न थे उनके घरों से आश्रम के साधुवों, पंडितों द्वारा बुलवाकर शिक्षा दिलाना, भजन गवाना, अपने पास बिठाना, प्रसाद और भण्डारों से प्रसन्न और संतुष्ट करना आदि अनेक प्रकार से उनका पालन करते थे। इसी प्रकार कन्याओं के लिए लड़कों से भी अधिक उचित प्रबन्ध करके सुशिक्षिता बनाना, गौओं की अच्छी नसल बनाना, उत्तम वृक्षों का लगवाना आदि अनेक काम जो प्राणी मात्र के हित करने वाले हैं वह श्री महाराज जो ने करवाये उन्होंने हमारे कल्याणार्थ जो २ काम करवाये हैं हम उनके उपकारों को किस प्रकार भूल सकते हैं ।

५- गंगादत्त जी पाण्डेय बी० ए० इस प्रकार लिखते हैं :—

पूजनीय श्री १०८ परम हंस परमानन्द जी महाराज उन प्रातः स्मरणीय उच्च आत्माओं मे से थे जिनका समस्त जीवन लोक सेवा, लोक कल्याण और दुखित प्राणियों के कष्ट निवारण करने में व्यतीत हुआ, उन्होंने जो बहु मुल्य सेवायें की हैं। ऐसी उच्च आत्माये बहुत कम देखने मे आती हैं। वह समाज, वह जाति और वह देश धन्य हैं जहां ऐसे उच्च कोटि के

महापुरुष जन्म लेकर अपनी दैवी विभूति से उसे अलंकृत करते हैं।

सबसे पहली बात महात्मा जी के दर्शन कर जो दर्शक को प्राप्त होती थी वह उनकी दैवी सम्पदा थी। भक्ति भाव से प्रेरित होकर जब २ हमको उनके दर्शन करने का सौभाग्य मिला तब २ एक विचित्र शक्ति, एक अपूव ज्योति और विशेष आनन्द का अनुभव हुआ महात्मा जी के उपदेशों को, उनके सरल बोल चाल की भाषा को सुनने से शक्ति, तृपित आत्माओं को मिलती थी।

वे समस्त रात्रि पर्यन्त कीर्तन सुनने में तन्मय हो जाते थे। हमको अभी महात्मा जी की रुग्णावस्था में जब वे शिमले में धोल्पुर हाउस जाखू में टिके हुए थे उनके शुभ दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ। असह्य वेदना होने पर भी इतना आत्म-बल इतना धैर्य इतना शिष्टाचार कम देखने में आता है। वास्तव में यही मनुष्य का चरित्र बल है जो उसे साधारण मानव से उठाकर लोकोत्तर महात्माओं की श्रेणी में पहुंचाता है।

महात्मा जी ने अपने जीवन में जितना प्रचार गायत्री मंत्र का किया है उतना कदाचित ही अब तक किसी ने किया हो, प्रत्येक दर्शक से पहला प्रश्न आपका गायत्री मत्र के ही ऊपर हुआ करता था। आपका दृढ़ विश्वास था कि "गायत्री वेद जननी गायत्री पाप नाशिनी। गायत्र्यास्तु पर नास्ति दिवि चेह च पावनम्॥"

इसीलिए आपने असंख्य पुस्तकें गायत्री मंत्र की छपवाकर बिना मूल्य जनसाधारण को वितरण की हैं। महात्मा जी का दिया हुआ

प्रसाद आशा है कि जब तक अनेक श्रद्धालु भक्तों के पास विद्यमान होगा। यदि हम लोग उनकी आज्ञानुसार गायत्री मत्र का दिन में ३ समय जैसा वे अपने श्री मुख से कहा करते थे स्मरण कर सक ता उनकी आत्मा को अपूर्व शक्ति मिलेगी और अपने जीवन को सफल कर सकें।

एक बात जो हमको महात्मा जी के पावन चरित्र में असाधारण प्रतीत हुई वह यह है कि हमने कभी भी उन्हे क्रोध करते या किसी से कोई अपशब्द कहते नही सुना। आप अत्यन्त ही शान्ति प्रिय और कोमल हृदय थे। मनुष्य मात्र को उप सर्वव्य पी भगवान की मूर्ति मानकर सब से बड़े प्रेम से मिलते थे। महात्मा जी न आश्रम को जिस स्वर्गीय विभूति से अलंकृत किया है वह देखते ही बनता है। हमारे हृदय में आश्रम की वह भव्य मूर्ति सदा जाग्रत रहेगी। 'हलराम पथ" हलधर लक्ष्मण राम सडक, विशाल गोशाला, भव्य सत्संग भवन, अतिथि शाला, भक्ति प्रेम पाठ-शालाय और छात्रालय जिस उच्च कोटि के कौशल से बनाए गए है उनको देखकर बडे से बडे इन्जीनियरों को अपना सिर झुकाना पडता है।

यही नहीं महात्मा जी ने शिमले में सत्संग सभा को जन्म दान दिया है। जो आपके शुभाशीर्वाद से बहुत सुन्दर कार्य कर रही है। आपने नेत्र सुधारक संघ खोलकर अनेक दीन भाईयों को ज्योति प्रदान की है। स्थान २ पर निशुल्क नेत्रों का औपरेशन करवा आपने चक्षुहीन भाईयों को नूतन जीवन प्रदान किया है वे धन्य हैं।

"जीवनमुक्त श्रीमहाराजजी" लेख में श्री नन्दकिशोरजी श्रीवास्तव एम० ए० एल० एल० बी० लिखते हैं :—

परम पूज्य श्री महाराजजी एक सिद्धयोगी थे। उनको सारी ऋद्धि-सिद्धियां प्राप्त थीं। परन्तु उनकी शक्ति ब्रह्म की शक्ति थी और इसीलिए सिद्धियों से बढ़कर थी। उनमें चमत्कार था और उनके पास रहने वालों ने तथा उनके परम भक्तों ने उसे कई बार देखा भी, वे सदैव ब्रह्म में लीन रहते थे। योगबल से वे लोक-लोकान्तरों में घूमा करते थे और उनको मालूम था कि कौन-सी आत्मा कहां पर है ? संसार के प्राचीन-से-प्राचीन जमाने के विद्वानों, वैज्ञानिकों और सिद्ध सज्जनों की बाबत उन्हें लिखित इतिहासों से कहीं अधिक ज्ञान था। उन लोगों के विचारों और सिद्धान्तों को वे इतनी स्पष्ट रीति से समझाते थे कि मानों ठीक उन्हीं लोगों के शब्दों को दोहरा रहे हों। प्रत्यक्ष में उनको हिन्दुस्तानी भाषाओं के अतिरिक्त दूसरी विदेशी भाषाऐं मालूम नहीं थी, परन्तु ऐसा कई बार अनुभव हुआ मानों कि उनको संसार की सब भाषाएं समझने की शक्ति प्राप्त है। सूक्ष्म शरीर से वे ग्रीस, रोम, पुर्तगाल, अमरीका, इंगलैंड, टर्की, जापान, रूस आदि देशों में भी भ्रमण किया करते थे और इसीलिए व्यवस्थाओं का पूर्ण ज्ञान रहता था। इसी आधार पर वे होनेवाली बातों का पहले ही परिचय दे दिया करते थे। मसोलिनी की विजय का एक प्रभाव ऐसा है कि जिसको सब सत्संगी याद कर सकते हैं। इन्हीं कारणों से वे सुकरात, अफलातून, सीज़र, सिकन्दर, होमर, नेपोलियन, काण्ट, हेगल, वार्किल, न्यूटन की बातें साधारण प्रसंगों में ऐसे कह जाते कि मानो अभी-अभी उनसे बात-चीत करके आए हैं। एक बार शिमले में उन्होंने एक ऐसा प्रभावशाली उपदेश दिया कि हेडमास्टर वैद्यनाथ खन्ना

सुनकर दंग रह गये और पूछने लगे कि श्री महाराजजी ने ह्यूम और वाकिल आदि की बावत कहां पढ़ा, किस पुस्तक में, कब समय मिल गया, और ऐसी-ऐसी बारीकियां कब याद कर डालीं ? फिर उस उपदेश के चमत्कारी सिद्धान्तों को समझकर तो वे मुग्ध हो गये और उन्होंने श्री महाराजजी के चरणों में रहने की प्रबल इच्छा प्रकट की। उस उपदेश का सार यह था कि आधुनिक युग किसी बीते हुए युग से खराब नहीं है। श्री महाराज जी ने सृष्टि के आरम्भ से लेकर और आज तक के युगों का सिंहावलोकन कर डाला और हर एक युग की भली बातें और बुरी बातें सामने रखकर नतीजे श्रोताओं से निकलवाये। उन्होंने बतलाया कि आधुनिक युग में भी अच्छाइयां और बुराइयां हैं परन्तु जिन मनुष्यों को कुछ कर्म करना है और जीवन व्यर्थ नहीं गंवाना है। उनको यही समझना चाहिए कि और युगों से यही युग अच्छा है क्योंकि इसी से हमारा घनिष्ट सम्बन्ध है और इसी में हमारा जन्म हुआ है। वे नित्य-निरन्तर भजन में ही स्थित दीखते थे।

उनकी निद्रा योगनिद्रा थी, कि जिससे उठकर वे एक अद्भुत उपदेश दिया करते थे। ऐसी निद्रा के बाद उनकी अवस्था एक विशेष रूप से दिव्य हो जाती थी और जिस किसीने उनकी उस अवस्था की गुलाबी आंखें देखी हैं वह कह सकते हैं कि उनमें ध्यान की कितनी एकाग्रता पाई जाती थी। इसी से श्री महाराजजी के लिए यह एक साधारण बात थी कि वे किसीके मन की बात या उसका रोग, या उसका शोक जान लें। इसका परिचय भी दे देते थे परन्तु एक ऐसे साधारण प्रसंग में कि जिससे कोई यह न जान ले कि श्री महाराजजी में यह दिव्य शक्ति भी है। उनकी तपस्या का इतना बल था कि वे मरते हुए आदमियों को बचा देते थे, इसका तो

उन्होंने बहुत ही प्रत्यक्ष परिचय दिया है। सेठ बनवारीलाल लोहिया, राव बहादुर कप्तान बलवीरसिंहजी, नवल ब्रह्मचारी व पानीपत के पं० लक्ष्मणदत्तजी इसके साक्षी हैं।

जो शक्ति श्री रामकृष्ण परमहंस में सुना करते थे वही श्री महाराजजी में प्रत्यक्ष देखी। **गायत्री मन्त्र** को श्री महाराजजी इसीलिए सबसें ऊंचा स्थान देते थे कि उसमें स्तुति और उपासना के अतिरिक्त सबसे पवित्र प्रार्थना भी है। जब कभी सत्संग में वे "राम नाम नहिं छोड़ूं रे बाबा" गाते थे कि जिससे साफ़ मालूम हो जाता कि उनका शक्ति-स्रोत क्या है।

वे मनुष्यमात्र का उद्धार हर प्रकार से चाहते थे। मुख्य उद्धार इसमें मानते थे कि मनुष्य का सम्बन्ध उसी **ब्रह्म-शक्ति** से हो जाए कि जिसकी विभूति वे स्वयं थे, और इसका सबसे बड़ा साधन **प्रार्थना** मानते थे। इसीलिए उन्होंने कुछ महत्व-पूर्ण प्रार्थनाएं भी लिखवाईं और उनमें से सबसे ज्यादा चमत्कार वाली उनकी **गायत्री मन्त्र** के आधार पर लिखवाई हुई प्रार्थना है जिसको कि उन्होंने अपने जाने से कुछ ही दिन पहिले लिखवाया था। उनका विश्वास भगवान की दयालुता और कृपालुता में इतना बढ़ा-चढ़ा हुआ था कि वे कहा करते थे कि ईश्वर सच्ची प्रार्थना को कभी नहीं टालता चाहे वह **बुरी** ही क्यों न हो।

परम पूज्य श्री महाराजजी में यह गुण विशेष था कि वे किसी की प्रार्थना को टालते नहीं थे जिसने जो कुछ मांगा उन्होंने उसे अवश्यमेव वही दिया और यदि किसी ने शायद उनसे जीवन भी मांगा तो उन्होंने परोपकारार्थ जीवन भी दे दिया और वह भी बिना जितलाये हुए। वे अन्तर्यामी थे और अन्तर्यामी रूप से प्रेरणा भी कर सकते थे इसलिए यह

आवश्यक नहीं था कि उनसे मुंह फाड़कर ही मांगा जाए। मन को गति को, मन की इच्छा को वह स्वयं ही समझ जाते थे। परन्तु जिस किसीने बेसब्री से मुंह फाड़कर भी उनसे कहा, उसको उन्होंने शीघ्र ही पूरा किया।

वे उपदेशों में कहा करते थे कि **ब्रह्म के अतिरिक्त** और कुछ नहीं है। और ब्रह्म की व्याख्या उसी प्रकार करते जैसे संसार के बड़े-बड़े पीर पैगम्बर, हजरत ईसा व मूसा व मुहम्मद व गुरु नानक कर गये हैं, अथवा जैसा कि संसार के मजहबों के पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थों में लिखा है। और मुख्यतया वह ऐसी ही होती थीं कि जैसी गायत्री मन्त्र में बीज रूप से की गई हैं, परन्तु उनके शब्द बहुत ही सरल, गम्भीर और रोचक होते थे कि सहज ही में जटिल से जटिल बात समझ में आ जाती थीं। फिर उनके शब्दों में एक शक्ति थी कि जो नास्तिक को आस्तिक, दुराचारी को सदाचारी बना देती थी। और सर्वसाधारण में ईश्वर के लिये श्रद्धा और भक्ति उत्पन्न कर देती थी। आत्मा को वे ईश्वर, ब्रह्म का ही अंश मानते थे। और ज्योतिस्वरूप अजर-अमर मानते थे कि जो सर्वदा, शान्त रहता है और जिस में ज्ञान और आनन्द का भण्डार है। संसार एक क्रीड़ास्थल है कि जहां आत्मा एक शरीर रूपी विचित्रि नौका में क्रीड़ा करती है। खेल ही में वह अपने को बन्धन में डाल लेती है, उपाधियें लेकर विषय भोग में फंस जाती है। परन्तु वास्तव में यह एक विशेष अवस्था है कि जिसमें आत्मा को कर्म करने का अवसर मिलता है। यदि ज्ञान रखते हुए क्रीड़ा में आत्मा प्रविष्ट रहे तो बहुत अच्छा है यदि अज्ञान अन्धकार में कूद जाय तो समय व्यर्थ गया समझो। इसीलिये वे ज्ञान प्राप्ति पर जोर दिया करते थे और उसके लिये प्रेम, भक्ति मार्ग, भगवद्भजन कीर्तन आदि

ही मुख्य साधन बतलाया करते थे। उनकी दृष्टि में माया रूपी संसार तो क्रीड़ास्थल था ही, बुरे और भले को भी वे माया ही के बन्धन मानते थे। मनुष्य कृत सामाजिक व्यवस्था के लिए निस्संदेह भला आदमी बुरे से अच्छा है परन्तु उनकी अध्यात्मिक दृष्टि में बुरे भले का कुछ भेद नहीं था। सारी बात है ज्ञान की। वास्तव में ज्ञान किसी को भी नहीं। और जिस किसी को भी ज्ञान हो गया बस वह भलाई और बुराई से ऊपर उठ गया। और ऊपर उठने का तरीका सिर्फ भगवान् की भक्ति को बतलाया करते थे। परन्तु ज्ञानी का धर्म यह नहीं कि वह क्रीड़ास्थल के मिथ्या होने का ज्ञान होते ही उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दे अथवा उसके प्रति औरों में निराशा के भाव उत्पन्न करे। इस संसार को जितना हो सके हरा भरा और सुभीते वाला, दुःख दरिद्रता से रहित बनाने का प्रयत्न करे। ज्ञान फैलाए, धर्म और सदाचार का प्रचार करे, सच्ची शिक्षा दे, बीमारों दीन-दुखियों की सहायता करे, समाज को मिथ्या बन्धनों से मुक्त करे, सच्चे प्रेम के बीज बोए, मनुष्य जाति में से रोग, द्वेष, ईर्षा, पाशविकता को दूर करे और उनमें सहिष्णुता, शान्ति, विज्ञान, कला, प्रेम इत्यादि बढ़ावें। जीव मात्र पर दया करनी सिखलावें। ऊंच नीच के भाव को मिटा कर, एकता और समानता फैलावे। क्योंकि बुरे वायु मण्डल से निकलने पर मनुष्य का आत्मा उन्नति पथ पर आ जाता है और वह सदा उन्नति करता रहता है। समाज तो एक मनुष्य कृत व्यवस्था है कि जिसका परिवर्तन मनुष्य पर निर्भर है और जिसके नियम मनुष्य द्वारा बनाए गये हैं। मनुष्य जब चाहे उसमें उथल-पुथल कर दे, जब चाहे क्रान्ति मचा दे। इस लिये इसके ऊंचे उद्देश्य होने चाहियें और इसका लक्ष ज्ञान होना चाहिये। उसमें कम से कम बन्धन होने चाहिये

और अधिक से अधिक स्वतन्त्रता। समाज की व्यवस्था सर्वथा निषेधात्मक नियमों पर नहीं होनी चाहिये जैसी कि आज कल अवनत हिन्दू समाज जो पुरातन और सनातन कहा जाता है, बल्कि अत्यन्त आवश्यक बातों का ही निषेध होना चाहिये। जिससे व्यक्तित्व के विकास का क्षेत्र संकुचित अथवा सीमित न हो जाय। इसीलिये सामाजिक रुढ़ियां भी ऐसी होनी चाहिये कि समाज और व्यक्ति की उन्नति में किसी प्रकार की बाधा न हो। काल परिवर्तनशील है, संसार चेतन है, जड़ नहीं, इसलिये यह भी उन्नतिशील है, मनुष्य की बुद्धी भी दिन प्रति दिन विकास को प्राप्त होती है, इसलिये समाज की भी उन्नतिशील व्यस्वथा होनी चाहिये और देश, काल, और आवश्यकतानुसार परिवर्तन होते रहने चाहिये। स्वस्थ बुद्धी के नेतृत्व में समाज को चलना चाहिये न कि ढ़कोसलों और बुढ़िया पुराण के। संक्षेप में समाज में एक ऐसे वायु मण्डल का रहना आवश्यक है कि जहां मनुष्य की उन्नति दिन प्रति दिन हो, उसकी बुद्धी विकसित और चमत्कृत हो, उसकी शारीरिक उन्नति हो, वैज्ञानिक उन्नति हो, अध्यात्मिक उन्नति हो और आनन्द ही आनन्द की महक उठती रहे। इसीलिये उन्होंने स्त्रियों को समानाधिकार देने का न्याय कर दिया है, और इस ही लिये उन्होंने वृद्ध यद्यपि प्रचलित विवाह पद्धति के सूधार का भी आदेश कर दिया है। यही कारण था कि श्री महाराज जी नवयुवकों को जिम्मेदारी लेने का वहुत ही अधिक अवसर दिया करते थे, बल्कि वृद्धों पर तो इतना विश्वास भी नहीं करते थे क्योंकि बूढे तोते आखिर कौन-सा नया पाठ पढ सकते हैं और उनमें कितनी शक्ति और कितनी नवीनता होती है कि जो वे किसी नवीन काम को कर दिखा सकते हैं सिवाय बाधा

डालने के। इस बात का श्रेय श्री महाराज जी ही को है कि उन्होंने नवयुवकों पर इतना विश्वास किया और उन्हें विश्वास के योग्य ठहराया। श्री महाराज जी की दया दृष्टि नवयुवकों पर ही नहीं बल्कि आधुनिकता और नवयुगता पर भी थी। यह उनकी कृपा विशेष समझनी चाहिये क्योंकि आधुनिकता पर नवयुवकों के अतिरिक्त सब की कड़ी ही दृष्टि पड़ती है, सब की बहुत कठोर ही आलोचना होती है। बल्कि कोई भी उसे भला नहीं बताती उल्टे सब उसे बुरा ही कहते हैं, धिक्कारते हैं और अनेक सज्जन तो अपशब्द भी कह जाते हैं आप इसे सराहा करते थे। वे कहा करते थे। नये विचार, नयी स्वतन्त्रता, नये अविष्कार कुछ बुरे नहीं है बल्कि आधुनिक बुद्धिमानों के चमत्कार हैं, उनसे पूरा लाभ उठाना चाहिये। जीवन में वह बहुत सहायता देते हैं परन्तु जो बहुत अच्छी-अच्छी और अमर प्राचीन बातें हैं उन्हें भी मत भूल जाओ क्योंकि वे ही मूलाधार हैं। यदि प्रचीन बातों को भूल जाने की बुरी आदत पड़ गयी तो उन्नति बन्द हो जायेगी साथ ही साथ जो आजकल की हानिकारक और बुरी बातें हैं, कई प्रकार के जगत् जंजाल और दूषण जैसे "निरर्थक फैशन् नास्तिकता, विषय वासनादि दुर्व्यसन" इनको अपने समीप मत आने दो क्योंकि इनसे ज्ञान का लक्ष्य जाता रहता है। और घोर अवनति तथा अन्धकार और अविद्या में प्रवेश हो जाता है। **वेदों को** इस युग में ले आओ, तुम्हारे पास तो हवाई जहाज है. वेदों के पास उसी पुराने फैशन के ठेलों में बैठकर पुराने युगों में मत घुस जाओ नहीं तो संसार में तुम पीछे रह जाओगे। वे कहा करते थे कि हर समाज की, हर धर्म की, हर मनुष्य की अच्छी बातें अपनालो और उन्नति करो। अपने ज्ञान को यथार्थ रखो, प्रसन्न रहो, खेलो कूदो, स्वतन्त्र

रहो परन्तु बिना नुकेल के उपद्रवी ऊंट मत बनो, जहां सुधार की आवश्यकता हो सुधार कर लो परन्तु इस क्रीड़ास्थल को जो इस विश्व का रंगमंच है दूषित मत करो, हरा भरा रखो, यही ईश्वर की इच्छा है। और जो आने वाले युग हैं उनके लिये हर प्रकार से तैयार रहो। बुरे काम करके भगवान को दोष मत दो, अपने दुःखों का उत्तरदायक भगवान को मत ठहराओ। भगवान ने तो बुद्धि दे दी। उसका ठीक प्रयोग करो। परन्तु जो दुःख होता है वह मनुष्य की अपनी गलती और लापरवाही से होता है भगवान नहीं देता यदि यह कहा जाये कि भगवान देता है फिर मनुष्यता और सहानुभूति तो पाप हो जाये। और ईसा और मूसा तो बड़े पापी ठहराये जायें क्योंकि इन्होंने मनुष्य के दुःख दूर करने का बड़ा प्रयत्न किया। यदि वे दुःख भगवान ने दण्ड के रूप में उन दुःखी मनुष्यों को दिये थे तो इन पैगम्बर महात्माओं को क्या अधिकार था कि वे उन्हें दुःखों से मुक्त करते और भगवान के विरुद्ध काम करते। परन्तु यह ठीक नहीं है। भगवान तो भला ही करता है। प्रार्थना किये जाने पर वह अवश्यमेव सुनता है और यद्यपि मनुष्य का ही कुकर्म क्यों न हो अपनी दयालुता से सुधार देता है।

कैसी उच्छ शिक्षा है कि जिसको देकर श्री महाराज जी ने जीव और ब्रह्म, माय और जीव, हृदय और मस्तिष्क, व्यवहार और प्रेम, विज्ञान और धर्म की प्राचीन फूट, पुराना अपवाद, पुराना झगड़ा मिटा दिया और उनमें अनिवार्य एकता स्थापित कर वास्तव में उन्होंने सनातन धर्म को उदार बना कर उस ही का उद्धार नही किया बल्कि सब धर्मों और मत मतान्तरों और उनके अनुयायियों के बीच का झगड़ा हटा दिया और यदि हठ बुद्धि छोड़कर देखें तो सच्ची भक्ति और प्रेम

का रास्ता दिखा

जब ऐसे म
मिशन, उद्देश्य पू
वह काम ऐसा च
वे शरीर को त्या

पांच छः म
दिन कोई सुबह
परोपकार के लि
चाहिये और ह
लोग जो श्री म
फिर महाराज
जब शिमला जा
वे गाड़ी की
सत्य है।" ऐसे
पूछा कि आप
जायेंगे। इसी
ध्यान देने से म
धौलपुर हाउस
निजरूप में लय
के शरीर को
तो आश्रम की
थी। उनके ज
विरह वेदना क

आज ३३ व
उनकी महिमा,
आनन्द व शान्ति
अनुभव होता है

का रास्ता दिखा दिया ।

जब ऐसे महात्मा, ऋषि महर्षि देख लेते हैं कि उनका मिशन, उद्देश्य पूरा हो गया अर्थात् जिस लिये वह आये थे वह काम ऐसा चल निकला कि अब बाधा नहीं पड़ सकती तो वे शरीर को त्याग देते हैं ।

पांच छः महीने हुए हंसते-हंसते श्री महाराज जी ने एक दिन कोई सुबह के आठ बजे यह कहा कि मनुष्य का शरीर परोपकार के लिये है और तुम सबको परोपकार में रत रहना चाहिये और हमारी तो इच्छा शरीर छोड़ने की है । सब लोग जो श्री महाराज जी की गाड़ी के साथ थे घबड़ा गये । फिर महाराज जी हंसे और बात को टाल गये अब की बार जब शिमला जाने लगे तो सत्संग भवन के नीचे मोटर तक तो वे गाड़ी की बजाये चारपाई पर आए और 'राम नाम सत्य है ।" ऐसे शब्द भी कहते आए । जब उनसे किसी ने पूछा कि आप कब आयेंगे तो कहने लगे कि जीते रहे तो आ जायेंगे । इसी तरह और भी ऐसी बाते हैं जिन पर अब ध्यान देने से मालूम होता है कि वे अन्तिम समय की ही थी धौलपुर हाउस शिमला में ६ जुलाई सन, १६३६ को आप निजरूप में लय हो गये, सब हा-हा कार करने लगे । जब उन के शरीर को ११ जुलाई के ११ बजे आश्रम में ले कर आये, तो आश्रम की आत्मा अलंकारहीन, भूषणरहित विसुक रही थी । उनके जाने के दुख को उन के भक्त कृष्ण गोपियों की विरह वेदना का साक्षात अनुभव कर रहे थे ।

आज ३३ वर्ष बीते हैं फिर भी विरह-वेदना वैसी ही चल रही है। उनकी महिमा, गुण-गान और कृपामय वार्तालाप में एक विशेष आनन्द व शान्ति का, तथा सूक्ष्म शरीर से वे अब भी साथ हैं ऐसा अनुभव होता है ।

"प्रभावशाली महापुरुष" लेख में श्री जमनालाल जी बजाज जो अपने समय में कांग्रेस के अग्रणीय नेता थे और महात्मा गांधी जी के दायें हाथ थे, लिखते हैं :

१. श्री महाराज जी ने हमारे सामने निश्काम सेवा व नि:स्वार्थ प्रेम का आदर्श रखा। २. श्री महाराज जी का जीवन हमें सिखाता है कि उनके आदर्श के अनुसार हम भी जाति-पांति के भेदभाव भुलाकर त्याग और प्रेम से व्यक्ति मात्र की (जनता जनार्दन की) सेवा करें।

"मेरे परम आराध्यदेव" लेख में श्री ब्र० भूमानन्द जी, कार्यकर्ता श्री भगवद्भक्ति आश्रम, अपने हृदय के उद्‌गार प्रकट करते हैं कि सृष्टि के आदि से यह नियम चला आया है कि जो महान् आत्माएं संसार के उद्धारार्थ किसी महान् व उच्च लक्ष को लेकर अवतरित होती हैं वे सर्वदा विशेष गुण सम्पन्न होती हैं। यहां घोर अशान्ति के समय शान्ति व परम आनन्द स्थापित करने के लिये श्री महाराज जी अवतरित हुवे थे। इन महापुरुष का प्रकट होने से पूर्व का समय अज्ञात सा ही है। परन्तु ऐसे भक्त जिन्होंने इन शान्ति के अवतारके ५० या ५५ वर्ष पूर्व दर्शन किये थे उनके द्वारा विदित हुआ है कि उन्होंने इनको इस समय भी इस ही अवस्था में देखा था।

इतिहास में यह बात सर्वदा सत्य है कि महान पुरुषों का जिस स्थान में पदार्पण होता है उस स्थान के भाग्योदय हो जाते हैं। उनकी अलोकिक शक्ति से जंगल में भी मंगल हो जाते हैं। यह बात यहां पर भी अक्षरष: सत्य ही घटती है। अब की बार पूज्य चरणों की सेवा में रह कर, कुछ काल **जींद** में रहने का सौभाग्य हुआ। वहां बनखण्डी नाम का एक स्थान है। कहते हैं कि ३०-३५ वर्ष पूर्व एक बार श्री महाराज जी घूमते-घूमते उस स्थान पर आकर ठहर गये। वहां पर एक

छोटे से टूटे फूटे से चबूतरे पर महादेव की मूर्ति थी और एक छोटी सी कुटि थी जिसमें आदमीं भली प्रकार खड़ा भी नहीं हो सकता था। उसी में श्री महाराज जी ने आसन लगाया लाल कभी छिपाये छिपता नहीं है फिर ऐसी महान् आत्मायें कैसे छिप सकती थीं ? उस निर्जन स्थान में ही दर्शनार्थियों का तांता लग गया। वह स्थान जहां दिन में कोई मनुष्य नहीं फटकता था स्वर्ग की भांति रमणीक होने लगा। रात्री के एक-एक दो-दो बजे तक जिज्ञासु भक्त श्री महाराज जी का उपदेश सुनते थे। उपदेश में हिन्दू ही नहीं बड़े-बड़े मुसलमान भी आया करते थे। वहां के लोगों ने बताया कि रियासत के एक प्रतिष्ठित मुस्लिम अहलकार तो अपनी श्याम की नमाज जब तक श्री महाराज जीं वहां पर विराजे नित्य इनके पलंग के पास बैठ कर पढ़ते थे। जब लोगों की बहुत भीड़ होने लगी और चौबिस घंटों में घंटा भर भी एकान्त नहीं मिलने लगा तो श्री महाराज जी शाम को बीड़ (सरकारी जंगल) में चले जाया करते थे परन्तु लोगों में इतनी श्रद्धा भक्ति और लगन थी कि जिस भयानक बीड़ में दिन छुपने के पीछे लोग भूलकर भी नहीं जाया करते थे जिज्ञासु भक्त श्री महाराज जी की खोज में इस प्रकार पागल होकर फिरते थे जैसे किसी काल में गोपियां कृष्ण को लताओं और कुंजों में ढूंढती फिरती थीं। जब वे परेशान हो जाते और पता नहीं लगता तब श्री महाराज जी जोर से "हर-हर महादेव" का शब्द करते। उस समय उन लोगों को उस "हर-हर महादेव" में कितनी प्रसन्नता होती होगी यह पाठक स्वयं ही अन्दाजा लगा लें। जब सब लोग जाकर बैठ जाते थे तो श्री महाराज जी का उपदेश आरम्भ होता था। भक्तों को कितनी रात चली गयी है इसका उस अमृत वर्षा के कारण कुछ भी ज्ञान नहीं होता था। अब वहीं

निर्जन वनखण्डी स्थान श्री महाराज जी के प्रताप से ऐसा रमणीक बना हुआ है कि उस में एक तालाब और दो बड़े सुन्दर मकान तथा सैकड़ों बड़ पीपल के सुन्दर वृक्ष लगे हुये हैं। इसी प्रकार जींद में जयन्ती देवी नामक स्थान है जो प्रायः अज्ञात सा ही था। श्री महाराज जी जब पुनः जींद पधारे तब वहां पर ही एक नीम के नीचे आसन लगाया था। आज वह स्थान भी बड़ा रमणीक हो गया है, वहां पर बहुत से मकान बन गये हैं और प्रातःकाल बहुत से मनुष्य स्नान व भजन-ध्यान निमित्त वहां पर जाते हैं। रेवाड़ी आश्रम को जो कि आज दूर-दूर तक प्रसिद्ध है सन् १९१६ से पूर्व कौन जानता था इस इलाके के; जहां भूमि में कांटा, खारी पानी है अन्न में कांटा (जो पैदा होता है) बोली में कांटा (बोली बड़ी-कड़ी है) है, उसी समय भाग जाग्रत हो गये थे जब की श्री महाराज जी ने इस भूमि में पदार्पण किया। हम सबको **राव बहादुर राव बलवीर सिंह जी** जो कि इस ग्राम के रईस हैं का भी कृतज्ञ होना चाहिये उन्होंने प्रथम दर्शन में ही इन दिव्य व महान् आत्मा को पहचान लिया। पूज्य महाराज जी को इस इलाके पर कुछ विशेष ही कृपा करनी थी वरना स्थान तथा अनुकूलता तो इससे अधिक और भी कई एक स्थानों मे मिल सकती थी। भक्तों को आश्चर्य होता था कि जिस स्थान में दाल बनाने के लिए भी पानी दो तीन मील से लाना पड़ता है, जिस स्थान में वृक्षों की तो बात ही क्या घास भी उगना पसन्द नहीं करती, जहां सर्वत्र भुरट (चिरचिटे) और झाड़ों का एक छत्र साम्राज्य व्याप्त है उस स्थान को श्री महाराज जी ने अपना प्रधान कार्य क्षेत्र चुना है। उनको यह मालूम था कि ये व्याधियां मनुष्यों के मार्ग में बाधक हो सकती है भगवान् की आलोकिक शक्तियों के समक्ष

इनकी क्या गणना है ? वहां तो पदार्पण करते ही खारी पानी तुरन्त ही मीठे पानी में परिवर्तित हो गया था और ब्रह्मचारियों को आज्ञा दे दी गई कि अपने पीने के लिये जहां अनुकूल जंचे कुआं खोद लें। वे अपनी रसोई के पास कुआं खोदते हैं और पानी मीठा ही नहीं, स्वादिष्ट पाचन तथा आस पास के सब कुओं के पानी से हलका निकलता है। फिर क्या था आश्रम में स्थान-स्थान पर मीठे पानी के कुवें हो गये। वह भूमि जहां झाड़ और भुरट अपना साम्राज्य जमाये बैठे थे आज एक स्वर्गीय उद्यान के रूप में परिवर्तित हो गई। जिस भूमि में घास भी नहीं उगती थी उसी भूमि में हजारों गगन चुंबी वृक्ष ऊपर सर उठाये हुवे अपने एक मात्र आराध्य-देव का पत्ते-पत्ते से यशोगान कर रहे हैं।

वैसे तो सिद्ध पुरुष कभी भी अपनी सिद्धि या अलौकिकता को मुंह से कहना तो दूर रहा अपने किसी कर्म से भी प्रकट नहीं करते परन्तु कभी-कभी असाधारण अवस्था में ऐसी घटना हो जाती हैं। जिससे कि दर्शकों को उसका ज्ञान हो जाता है। एक बार श्री महाराज जी के पैर के अंगूठे में आंटन हो गई। भक्तों ने आग्रह किया कि इसको गर्म जल से सेका जाय। मैंने एक बड़े पात्र में जल गरम किया और खौलता हुआ पानी चूल्हे से उतार कर श्री महाराज जी के पलंग के पास रख दिया और कार्यवश नीचे चला गया। मैं बदकिस्मती से यह निवेदन करना भूल गया कि पानी बहुत गर्म है। श्री महाराज जी पलंग से उठे और उस गर्म जल में पैर रख दिया १५,२० मिनट पीछे मैं आया और पैर पानी में देख कर निवेदन किया कि पानी तो बहुत गर्म था। मैंने देखा कि वे उस समय किसी और ही अवस्था में थे। उनकीवृत्ति उस समय अन्तर्मुख थी। उन्होंने मेरे इन शब्दों से आंखें खोलीं,

वृत्ति बहिर्मुख हुई और पैर बाहर निकाला तो जो भाग पानी में था उस सब पर छाला पड़ा हुआ था। मुझे अपने कर्म पर बड़ा पश्चाताप हुआ। जनक राज विदेह थे और मिथला को जलती देख कर यह कह सकते थे कि "मिथिलायां दग्धमानाया न मे दह्यति किन्चन' परन्तु ऐसे महापुरुष विरले ही होते हैं कि जिनका शरीर जल रहा हो और उनको उसकी खबर भी न हो।

कभी-कभी जब चलते थे तो जूती यदि ढीली होती थी तो वह पैरों में से निकल जाती थी जब किसी भक्त की दृष्टि चरणों पर पड़ती तो पता लगता कि जूती पैर से निकल गई है। वह लाकर जूती पहनाने के लिए निवेदन करता तो उस समय ऐसा मालूम होता था कि हमने बलात् उनके ध्यान को बहिर्मुख किया है। वे पैर बढ़ा देते थे और फिर चल पड़ते थे। संसार में ऐसे महापुरुष और भी हुवे होंगे जो चलते, फिरते उठते, बैठते, सर्वदा तल्लीन रहते हों परन्तु हमने तो अपने जीवन में इनके अतिरिक्त किसी को देखा नहीं।

पूर्ण योगी—उनके मुख से हर समय महान शान्ति और महान आनन्द बरसता रहता था। कैसे ही असुर स्वभाव का मनुष्य हो जो एक बार आप के दर्शनों को चला गया वह सदैव के लिए आपका ही हो गया। मन को इतना वश किया हुआ कि इधर-उधर बहुत कम देखते थे मानो हर समय समाधी में लीन रहते थे। इस प्रकार **मौनानन्द जी** ने लिखा है :

राव श्री राम यादव लिखते हैं—

दुर्भाग्य से हमारे गांव में किसी प्रकार का सत्संग नहीं है। मैंने बचपन में किसी साधु महात्मा के दर्शन नहीं किये। इतना ही नहीं हम तो साधुओं को बुरा समझते थे। एक बार श्री महाराज जी ने राव बहादुर साहिब और महात्मा कृष्णानन्द जी को

हमारे खानदान के झगड़ों का फैसला कराने के लिये हमारे गांव भेजा। उस समय राव साहिब नांगल से मुझे अपने साथ श्री महाराज जी के दर्शनों को ले गये। मुझे श्री महाराज जी के दर्शन कर बहुत आनन्द हुआ ऐसा विशाल मूर्ति प्रेम और दया से भरी अमृत रूप वाणी कि जिसको सुनकर दुष्ट से दुष्ट मनुष्य का हृदय भी आनन्द से भर जाए। मैंने अपने दिल में राव साहिब का बहुत अहसान माना कि इन्होंने श्री महाराज जी के दर्शन कराके मेरा बहुत कल्याण किया है न मालूम श्री महाराज जी में क्या शक्ति थी उन्होंने मेरे चित्त को आकर्षित कर लिया। मेरा उन पर पूर्ण विश्वास हो गया। यह घटना सन् १९१९ की है।

जब मुझ को श्री महाराज जी में पूरा विश्वास हो गया तो मैंने यह चाहा कि मेरे कुटुम्ब वाले भी श्री महाराज जी का सत्संग करें। मेरे पिता जी का स्वाभाव हमारे खानदान से कुछ भिन्न था। वह बहुत सरल स्वभाव और सादगी पसन्द थे। उनके चित्त में दया भी बहुत थी। वह लेन देन का काम करते थे। जब किसी गरीब आदमी के पास कुछ देने को नहीं होता था तो वे नालिश नहीं करते थे उसका करजा सब माफ कर देते थे। वह गर्मी के दिनों में प्याऊ वगैरह लगाते थे और इसी तरह कुछ दान-पुण्य भी करते थे। मेरी प्रेरणा से वह श्री महाराज के दर्शन करने आये और दर्शन करके बहुत खुश हुए। श्री महाराज जी ने दया करके उनको तालाब में एक घाट बनाने की आज्ञा दी सो उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार कर ली। आगे चल कर जब उनका स्वर्गवास हुआ तो मैंने उनकी यादगार में आश्रम में ही मकान बनवाया। इस प्रकार धीरे धीरे हमारे समस्त परिवार को सत्संग हो गया सब लोग श्री महाराज जी में श्रद्धा-भक्ति

करने लगे।

श्री महाराज जी बड़े दयालु सन्त थे। वह सन्त क्या थे, वह तो भगवान का रूप थे। वह न तो कभी क्रोध करते थे और न कभी उदास रहते थे, सदैव प्रसन्न रहते थे। यदि मैं कभी किसी काम में गलती कर देता था तो केवल इतना फरमाते थे "**यह जो काम किया है वह ठीक नहीं हुआ, इसमें भलाई नहीं है, इस काम को इस ढंग से किया जाता तो अच्छा था!**" श्री महाराज जी के इस व्यवहार से मैं बहुत प्रसन्न रहता था और मैं निर्भय होकर बड़े उत्साह से काम करता था। श्री महाराज जी फरमाया करते **"सब काम भगवान की प्रसन्नता के लिये करने चाहिएं, अपने मन के लिये कोई भी काम नहीं करना चाहिये और भगवान का पूरा भरोसा रखते हुए प्रसन्नचित्त रहना चाहिये, किसी बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिये।"**

हमारे परिवार में जहां भक्ति का नाम भी नहीं था वहां उनकी दया से रातदिन भगवान की भक्ति होती है, दूर-दूर से भक्त लोग श्री महाराज जी के चरणों में आकर सत्संग, कीर्तन करते हैं। हमारे कुल का तो उद्धार कर दिया। श्रीमान राव बहादुर साहब ऐसे भक्त परोपकारी और प्रेमी बन गये कि उनके कारण सैकड़ों मनुष्यों को सत्संग हो गया।

श्री महाराज जी को गरीब और दीन-दुखियों से बड़ा प्रेम था। हमारे रामपुरे के जटिये गिरे हुए हैं। श्री महाराज जी उन लोगों के बालकों को शिक्षा दिलाते, उनके बच्चों को साबुन से नहलवाते, उनको पुस्तकें दिलवाते, कपड़े दिलाते, उनके लिये अच्छे-अच्छे पदार्थों का भण्डारा करवाते, मिठाई और फलों का प्रसाद दिलाते और फ़रमाते कि इनको खिलाने का बड़ा पुण्य है! जिस आदमी ने कभी भी मिठाई

नहीं खाई है उसी को, उसकी खाने में आनन्द आता है। इस-लिये उनका खिलाना ही पुण्य है, श्री महाराज जी इस इलाके को जगाने आये थे वह सबके हितैषी थे वह चाहते थे कि इन लोगों का राग द्वेष मिट जाये और यह लोग ईर्षा द्वेष करने के स्थान में सबसे प्रेम करने लगें और इनका जीवन सुखी हो जाए। जिसने श्री महाराज जी से द्वेष किया उन्होंने उससे भी प्रेम किया और उसकी भी भलाई की। वह सबको ही ब्रह्म दृष्टि से देखते थे। उनके चित में कोई अन्तर न था। मेरा श्री महाराज जी में अब भी पूर्ण विश्वास है। वह अब भी हमारी समस्त कामनायें पूरी करते हैं। अन्त में मेरी उनके चरणों में ही प्रार्थना है कि वे हमें ऐसी बुद्धि प्रदान करें कि जिससे हम उनके बताये हुए सन्मार्ग पर चल सकें।

"महर्षि की पुण्य स्मृति" लेख में श्री महावीर सहाय महकमा खास संग्रूर लिखते हैं:—

महान् आत्मा, परम हंस श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज सिद्ध योगीराज थे आपने भारतवर्ष के अनेक स्थानों में भ्रमण करके संसार ताप से परितप्त मनुष्यों को अपने मधुर और सारगर्भित उपदेशों द्वारा भक्ति मार्ग की शिक्षा देकर सीधे रास्ते पर लगाया। जींद, रामहृद (कुरुक्षेत्र) पालम, देहली, शिमला, रामपुरा, दादरी अनेक स्थानों पर सतसंग और हरिकीर्तन का प्रचार किया और **रामपुर के जागीरदार कैप्टिन राव बलबीर सिंह जी बहादुर** को सन्मार्ग की शिक्षा देकर और धर्म कार्यों में प्रवर्त करके उनकी काया ही पलट दी।

इस क्षुद्र सेवक को कई बार अपनी कृपा दृष्टि से एकान्त में दर्शन लाभ उठाने के अवसर प्रदान किये—अपार शान्ति प्राप्त हुई है दर्शन का विचार करके घर से चल पड़ने पर

ही हृदय एक प्रकार का आनन्द अनुभव करने लगता था उन की स्मृति और चर्चा अपार आनन्ददायक है। यथार्थ में स्वामीजी केवल एक बड़े धुरंधरयोगीराज, पूर्ण ब्रह्म ज्ञानी और बड़े महात्मा ही नहीं थे वरन उत्तम कोटि के सन्त थे उनके सत्संग में आने वालों को यह पूर्णतया विदित है कभी-कभी उनकी कृपा होने पर कोई-कोई शब्द मौज में उनके मुखार-विन्द से निकल जाता था जिससे यह अनुमान अवश्य लग सकता है कि उनके विषय में यह समझना कि वे किस कोटि के सन्त थे साधारण साधुओं का भी काम नहीं है, और हम जैसे क्षुद्रप्राणियों की बुद्धि के लिये तो सर्वथा अगम्य ही है। उसको वें ही लोग कुछ समझ सकते हैं जिन पर गुरू और सन्तों की पूर्ण कृपा हुई है।

एक बार एकान्त में किसी मन के उपदेश के सम्बन्ध में कुछ वार्तालाप हो गया था, मुझे याद है उस समय स्वामी जी ने यह शब्द कहे थे "यह तो निरंजन तक ही है।" और उनके एक पद में **"सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी"** यह शब्द आये हैं। जिससे जान पड़ता है कि वे केवल एक पूर्ण योगी ही नहीं थे बल्कि सच्चे सन्त थे परन्तु **साधारण बात चीत में कभी यह प्रतीत न होने देते थे कि वे इतने बड़े सन्त हैं, वे अपने-आप को बहुत ही गुप्त रखना चाहते थे**। वाक् सिद्धि के तो अनेक अनुभव लेखक ने और दूसरे अनेक व्यक्तियों ने किये हैं। वास्तव में उनकी महिमा गुप्त ही थी। वे अपने भक्तों की सहायता सहस्रों मील की दूरी पर बैठे हुए ही सन्त रीति से करते रहते थे। स्वयं मुझे वैसे अनुभव अनेक बार हुए हैं। भीमताल, अजमेर, संग्रूर, जींद आदि अनेक स्थानों पर जब भी किसी सहायता की आवश्यकता हुई तत्काल ही किसी न किसी विभिन्न ढंग से काम बन गया।

परोपकार के कामों में सतसंगियों को प्रवर्त्त करते थे और स्वयं भी बड़ी तत्परता से भाग लेते थे सौ वर्ष के लगभग आयु होने पर भी उनके मुखारविन्द की कान्ति सूर्य के समान थी। यह था अखंड ब्रह्मचर्य का तेज और योग का प्रताप।

आप ने लोक कल्याण का जितना काम किया जनता में भक्ति भावों को जाग्रत किया—रामुपरे में भगवद्भक्ति आश्रम साक्षात पुराने समय के प्राचीन ऋषियों के आश्रमों का आदर्श और गुरुकुलों का नमूना हमारे सामने रखा (**गत वर्ष १९३५ के कार्तिक मास में जींद में भी आश्रम की नींव डाली**) जिसकी देश के प्रमुख नेताओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की, इस आश्रम में ब्रह्मचर्य्य आश्रम, विधवा आश्रम, कन्यापाठशाला, अछूतपाठ शाला, गोशाला, पुस्तकालय, प्रेस इत्यादि संस्थायें बनाई। यह स्वामी जी के व्यक्तित्व का प्रभाव था कि आश्रम में अनेक धनी-मानी लोग समय २ पर उनके दर्शनों के लिये आया करते थे और अनेकों ने तो अपने लागत से अच्छे-अच्छे मकान आश्रम में बनाये हैं। ब्रह्मचारियों ने अपने रहने के लिए गुफायें बनाई हैं स्वयं कुएं खोदे हैं। यद्यपि यह आश्रम ऐसी भूमि में है जहां नहर का पानी नहीं लगता परन्तु आश्रम के वृक्षों पर दृष्टि डालने से आप कदापि यह न समझ सकेंगे कि यहां नहर का पानी नहीं आता। आश्रम में मृगों की डारे, सैंकड़ों मोर तथान्य पक्षी निर्भय हो कर विचरते हैं। एक हिरन तो उनके साथ भ्रमण करता था और मोर लोगों के हाथों पर रखे दाने तक बेखटके चुग लेते थे आश्रम में लगे हुए कदम्ब के वृक्ष किसी भी व्यक्ति को आज से पांच सहस्र वर्ष पहले की स्मृति कराने में पूर्ण रूप से समर्थ हैं। इनकी महत्ता का यह एक साधारण सा प्रमाण है कि देश के अनेक बड़े-बड़े व्यक्ति राजे महाराजे तक जो उनके दर्शनों का लाभ उठाते थे अपने

आपको कृतकृत्य समझते थे और स्वामी जी के अतुल प्रभाव से प्रभावित हुए बिना न रहते थे। कुछ दिन हुए शिमले में **लेडी विलिंगडन** ने उनके दर्शन किये थे और अपना नाम उस संस्था के साथ लगाये जाने की अनुमति ली थी जो कि स्वामी जी महाराज ने आंखों की चिकित्सा विशेष स्थानों पर मुफ्त करने के लिये स्थापित की हुई है। गरीबों को भोजन आदि मुफ्त दिया जाता था। उसमें डाक्टर मथुरादास जैसे प्रसिद्ध आंखों की चिकित्सा के विशेषज्ञ मुफ्त चिकित्सा करते थे कीर्तन, नृत्य और बांसुरी बजाने का आश्रम में अच्छा प्रबंध है। सच तो यह है कि स्वामी जी का व्यक्तित्व संसार के लिये अन्धेरे में दीप शिखा के तुल्य था। परन्तु बनना और बिगड़ना संसार का नियम है और वह अटल है।

"श्री महाराज जी की शिक्षाए" में ला० बैज नाथ खन्ना एम० ए० शिमला, बताते हैं :—

आश्रम के साधारण जीवन को निरीक्षण कर चकित ही रह गया कि वह प्राचीन उन्नत तथा गौरववती हिन्दू सभ्यता के चित्रपट पर अंकित होते हुए भी एक विशेष नवीन आधुनिकता अथवा नवयुगता की उषाकालीन झलक दिखला रहा था।

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रेवाड़ी मुझको अपने विचारों और दृष्टि कोण में मौलिकता रखता हुआ दिखाई दिया, प्रतीत हुआ कि परम पूज्य श्री महाराज जी हिन्दू धर्म के उन्नतिशील विचारों को एक नई लीक (लाइन) पर ले जा रहे हैं। श्री महाराज जी पूर्ण योगी थे परन्तु मनुष्यों के सम्मुख एक उच्चतम कर्म योगी का आदर्श रखते थे।

एक बार प्रातःकाल दूसरे अन्य भक्त शिष्यों की भांति मैं भी आश्रम वाटिका में घूमने गया। इस खोज में कि "गड्डी" (श्री महाराज जी जिस यान में घूमने जाया करते थे वह इस

नाम से विख्यात हैं) कहां है ? "गड्डी" शब्द की रटन लगाता हुआ, वहीं पहुंचा और मैंने बहुत भक्ति भाव से उनको शीश झुकाया। उन महर्षि की गड्डी वास्तव में एक अद्भुत यान था। उनके शिष्य, पुरुष तथा देवियां, वहां उपस्थित थे और घास काट रहे थे और बड़ी ही प्रसन्नता से उद्यान के एक पथ को बना रहे थे। गड्डी के सुखदायी सुर्योदय में मैं कुछ देर खड़ा रहा और मुझे अनुभूत हुआ मानो मेरे मन और शरीर में एक बिजली की लहर दौड़ रही है। तत्क्षण जब कि मैं खड़ा हुआ था, एकदम आदेश मिला। वह तो एक कल्याणकारी मन्त्र था, रोचक शिक्षा थी संकेत हुआ कि प्रसाद ले लो। मैं चौंक गया और विस्मित हो गया। वह यह था कि मैं घास काटूं वह प्रसाद यही था। कितनी बड़ी शिक्षा है। वह प्रसाद लड्डू, जलेबी, हलवे, मिठाई का नहीं था वरन् उनसे भी मीठा था। वह एक अद्भुत प्रसाद था।

दशहरा के अवसर पर मुझे परम पूज्य श्री महाराज जी के पवित्र दर्शनों का सुअवसर प्राप्त हुआ। आश्रम के ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणियां उसमें अपने ही ढंग से भाग ले रहे थे। वहां पर भी साधारण गांवों और नगरों की तरह राम लीला हो रही थी। परन्तु इस रामलीला में एक अनोखापन था एक नवीनता थी, एक मौलिकता थी, जिसको कि मैं नवयुगी अथवा आधुनिक कहूंगा। वह यह थी कि ब्रह्मचारिणियां भी श्री तुलसी दास जी की रामायण में से चौपाई के बाद चौपाई पढ़ती जाती थी और विद्वान ब्रह्मचारी वाल्मीक रामायण के संस्कृत श्लोकों से अनुवाद सहित उसी का अभिनय दिखलाते जाते थे। हिन्दुओं के लिए इसमें एक शिक्षा थी कि वे अपने धार्मिक त्यौहार किस प्रकार सुधार सके हैं। कोरा तमाशा, कोरा हुड़दंगा, नाचना-कूदना इत्यादि, (जैसा कि

और सर्वत्र बड़े से बड़े शहरों से लेकर छोटे से छोटे गांवों में हुआ करता है) कुछ फायदा नहीं पहुंचा सकता। सिवाय इसके कि चंचल लोगों को एक बहाना मिल जाय कि वे इकट्ठा होकर राम रीला मचा लें।

"पूज्य श्री महाराज जी" में श्री मूल नारायण मालवीय लिखते हैं कि पूज्य महाराज जी का दर्शन इस वर्ष मुझे अर्धकुम्भी के अवसर पर प्रयाग में हुआ था और केवल प्रयाग में ही आपके चरणों में बैठकर सतसंग का लाभ प्राप्त हुआ। पूज्य महाराज जी क्या थे और आप में क्या विशेषता थी इसके बतलाने की न तो योग्यता है और न मैं यह बतला सकता हूं कि आप क्या थे ? किन्तु इतना तो मैं कह ही सकता हूं कि पूज्य महाराज जी सद्गुरु थे और जो गुण गुरुओं में होने चाहियें वह सब आप में विद्यमान थे साथ ही इसके आप प्रेम की जीवन्त मूर्ति और पूर्ण ब्रह्मज्ञानी थे।

अर्धकुम्भी पर आप प्रयाग में कई दिनों तक श्री निरंजन लाल जी भार्गव के बाग में रहे। वहां मुझे प्रयाग म्युनिसिपल बोर्ड के एक्जीक्यूटिव आफिसर राय बहादुर पं० ब्रज मोहन जी व्यास, व युनिवर्सिटी के प्रोफेसर श्री परमानन्द जी और प्रयाग के ख्यात नामा सार्वजनिक कार्य के प्राण पं० मूलचन्द जी इत्यादि गण्यमान सज्जनों के साथ में आपके समीप जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। एक दिन रात्री को इंजिनियर मि० रावी साहब और दो एक वकील साहबान के साथ पूज्य महाराज जी के चरणों के पास बैठे थे। बड़ी कृपा कर महाराज जी ने उस दिन दो घण्टे के करीब अपने वचनामृत का पान कराया। भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और कर्म उपासना का श्रोत उस समय महाराज जी ने अपने मुखारविन्दु से ऐसा प्रवाहित किया कि वहां पर बैठी हुई मंडली आनन्द के समुद्र

में डूब गई। उसी वक्त यह प्रतीत हुआ कि महाराज जी पूर्ण हैं और हम सबों के पूज्य हैं। महाराज जी मतवाद से परे थे। आप प्राणी मात्र के हितचिंतक थे। जहां आप भक्ति ज्ञान का उपदेश देते थे वहां आप सेवा धर्म का भी सुन्दर उपदेश दिया करते थे। आप हरिनाम कीर्तन के बड़े प्रेमी थी। ऊपर मैंने जो यह लिखा है कि आप मतवाद से परे थे उसका अभिप्राय यह है कि जहां आप हिन्दू देवताओं का नाम कीर्तन में कहते कहाते थे वहां आप। **"अल्ला अक्का अम्बा देवी। परमानन्द लहें तेरे सेवी"** इत्यादि ध्वनियों का भी पाठ पढ़ाते थे। मैंने जब महाराज जी का सतसंग पाया तो उससे मुझे बड़ा लाभ हुआ। ईश्वर सम्बन्धी मेरे जो विचार थे वह और दृढ़ हो गये। यद्यपि मुझे सद्गुरु प्राप्त होने का सौभाग्य प्राप्त है किन्तु महाराज जी के सत्संग से जो लाभ मिला वह "अधिकस्य अधिकं फलम्" हुआ।

सेवा धर्म के आप जीवन्त मूर्ति थे। क्योंकि जिस समय आप जीव सेवा का उपदेश देते थे उसका अच्छा प्रभाव पड़ता था। मनोविकार निकल जाता था। आप ही की प्रेरणा से वहां दो सौ के लगभग गरीब अन्धों की आंखें खुलवाई। उनके भोजन शयन और चश्मों और दवाईयों का प्रबन्ध किया। आश्रम के मृदुभाषी और शांत ब्रह्मचारियों और देवियों ने अन्धों की जो सेवा की वह सेवा धर्म की अनुकरणी है।

एक दिन वह त्याग मूर्ति स्व० **पं० मोतीलाल जी के आनन्द भवन में पहुंचे**। महाराज जी ने कार से उतर कर "हर हर महादेव" का घोष किया। उस समय महाराज जी के कण्ठ से निकले हुए नाद की ध्वनि आनन्द भवन को आनन्दित करती हुई चारों ओर गूंज उठी। महाराजजी के सत्संग की किस किस बात की प्रशंसा करे सभी अनोखी थी। एक दिन

मैं रात के दस साढ़े दस बजे **महर्षि सच्चा बाबा** जी और नई गढ़ी के कुंवर दिवाकर सिंह और मिस्टर रावी के साथ सत्संग में पहुंचा। मुझे भय था कि कहीं महाराज जी शयन न करते हों किन्तु जब वहां पहुंचा तो दृष्टि उस ओर गई जिधर एक सुन्दर तपस्वी काषाय वस्त्रधारी विराजमान था और उसके तेज से कमरा जगमगा रहा था और वह ऋषि ग्रन्थावलोकन कर रहा था। मैं शून्य रह गया इतनी रात और वृद्ध शरीर अपने कार्य में लगा है। वहां ब्रह्मचारियों के सुन्दर कण्ठ से निकली हुई भाव भरी वाणी व कीर्तन ने सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

आश्रम की गोशाला का चित्र देखा तभी से आश्रम की ओर मेरा झुकाव हुआ। बाद में यह सुनने में आया कि पूज्य मालवीय जी भी श्री महाराज जी को बड़ी ऊंची दृष्टि से देखते हैं। एक बार **पूज्य मालवीय जी** भगवद्भक्ति आश्रम गये। वहां की गौशाला देखकर आपने कहा कि **आश्रम में गोपालन न कह कर यह कहें कि गोपूजन होता है तो ठीक है।**

'उच्चकोटी के सन्त" में आनरेबल श्री गोकुल चन्द नारंग एम० ए० पी० एच० डी० वजीर पंजाब लिखते हैं :—

कुछ साल हुए लाहौर में मुझ को परमपूज्य श्री १०८ स्वामि जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त, हुआ, और मैं उनके तेजस्वी दर्शनों तथा उच्च और गहन उपदेशों से बहुत प्रभावित हुआ। दो साल हुए जब मैंने भगवद्भक्ति आश्रम रिवाड़ी देखा तो मुझे प्रसन्नता और आश्चर्य दोनों ही हुए थे वह कितना अनुपम अद्वितीय रमणीक स्थान है। विभिन्न संस्था मध्यस्थ रखते हुए वह सारा स्थान एक मनोरम स्वर्गीय उद्यान सहित एक पवित्र ऋषि आश्रम प्रतीत होता था। इन सब संस्थाओं का सतसंग भवन, कन्या पाठशाला, अछूत,

पाठशाला, गऊशाला, हिन्दी प्रेस इत्यादि परम पूज्य श्री महाराज जी ही की विमल प्रेरणा से अस्तित्व प्राप्त है। जिस किसी को भी उनके दर्शनों अथवा सत्संग का लाभ प्राप्त हुआ है। अथवा जिस किसी सौभाग्यशाली को उनके चरण स्पर्श करने का सुअवसर मिला है उसके सिवाय धन्यवाद तथा उनका यशोगान के मैंने और कुछ नहीं सुना। पिछले पांच छः साल से श्री स्वामीजी महाराज शिमला निवासियों पर अत्यंत कृपा करके शिमला पधारा करते थे। उनकी दिव्य उपस्थिति का लाभ शिमला निवासियों ने इस प्रकार उठाया कि उन्होंने श्री महाराजजी की शरण लेकर और उनके कृपा-पात्र बन कर शिमले में अपने कल्याणार्थ एक सत्संग सभा बनाई जिसमें शिमला निवासी एक बड़ी संख्या में एकत्र होकर श्री महाराज जी की अमृत वाणी का श्रवण करके उनके उपदेशों को श्रद्धा भक्ति से अपने हृदय में स्थान देकर अपने को कृत्कृत्य मानते थे।

परम पूज्य श्री महाराजजी की अंधों के दुःख निवारण करने में और उनको फिर दुबारा आंखें दान करने में बड़ी ही रुचि थी, और मुझे उस वार्तालाप की बहुत रोचक स्मृति है कि जो लेडी विलिंगडन के साथ उन्होंने की जब कि वे शान्ति कुटी में श्री महाराज जी की पवित्र प्रेरणा से स्थापित 'नेत्र दुःख निवारणी समिति' द्वारा रचित अंधों के दुःख निवारणार्थ मेले में पधारी थीं। श्री महाराज जी के तेजस्वी दर्शनों से तथा उनके गंभीर थोड़े से वचन पुष्पों से जिनकी वर्षा करने की कृपा उस समय उन्होंने श्रीमती जी पर की और जिनको कि श्रीमती जी को मैंने अंग्रेजी में अनुवाद करके समझाया। श्रीमती लेडी विलिंगडन बहुत ही प्रभावित हुई। निःसन्देह परम पूज्य श्री महाराज जी एक

परम सिद्ध और असाधारण उच्च कोटि के संत थे।

"आदर्श शिक्षक" में सरदार सरमुख सिंह जी बी० ए० वकील लिखते हैं—

मेरा अहोभाग्य है कि मुझे भी श्री स्वामी जी के जीवन काल में न केवल उनके दर्शन करने का बल्कि उनसे पवित्र बात चीत सुनने और करने का विशेष अवसर मिल गया। मैं अपने जीवन के इन दिनों को कभी न भुलूंगा। जो लाभ और भाव उनके शुद्ध, पवित्र, स्वतन्त्र, परोपकारी, त्यागी और हितेषी जीवन का मुझ पर कुछ थोड़े से काल में ही पड़ गया वो मेरे दिल पर सदैव के दिये अंकित हो गया है। यद्यपि स्वामी जी स्थूल शरीर को छोड़ चुके हैं। परन्तु उनकी पवित्र याद अब भी मेरी आंखों के सामने वैसे ही देदीप्यमान् है।

श्री स्वामी जी महाराज एक विशेष पुरुष थे। वह त्यागी वैरागी, तपस्वी, कर्म योगी, महात्मा, पण्डित, विद्वान, निष्काम भाव से परोपकार करने वाले, सच्चे भक्त, मनुष्य-मात्र, पशु जगत, उदभिज जगत और जड़ जगत के सच्चे सेवक और हितैषी और उसके सम्बन्ध में अमली काम करने वाले और अमली काम की अपने सत्संगियों को शिक्षा देने वाले थे। उनका जीवन सादा था और वह सादा जीवन का ही प्रचार करने वाले थे। वह ब्रह्मचर्य के सच्चे पोषक, स्त्री शिक्षा के बड़े सहायक और गरीबों और दीन दुखियों पर दया दृष्टि रखने वाले थे। वह बहुत स्वतन्त्र विचारों के पुरुष थे।

इतनी आयु होने पर भी उनका चेहरा चमकता रहता था और नित्य आश्रम वासियों से वृक्ष लगवाने, सड़क बनवाने आदि कामों को बड़े प्रेम और उत्साह से करवाते थे। स्वंय मुझे भी कस्सी चलाने का काम देकर प्रसाद हासिल करने की आज्ञा दी यह बात में कभी नहीं भूलूंगा। उनके पास रहने

वाले सत्संगियों के जीवन में मुझे उनका खास हाथ नजर आता था। आश्रम में बीमारों की सेवा में लगे हुए ब्रह्मचारियों, साधुओं और देवियों के प्रेम और सेवा भाव को देख कर मेरा हृदय गद्-गद् हो जाता था और मैं उन पवित्र देवियों के शुद्धि जीवन की महिमा स्थान-स्थान पर गाता नहीं थकता। जैसे वृक्ष अपने फलों से पहचाना जाता है वैसे ही इन आत्माओं को देख कर मुझे स्वामी जी महाराज की अध्यात्मिक शक्तिओं का साफ पता चलता था। स्वामी जी को ग्राम सुधार का जितना प्रेम था उसका पता मुझे उनकी वार्तालाप से लगता है जो वह राव साहब से कर रहे थे। वह कह रहे थे कि लोगों के ग्रामों में सुधार की बातें क्यों नहीं कराते ? मुझे पूरा विश्वास था कि उनका शरीर और रहता तो वह थोड़े समय में ही आश्रम द्वारा बहुत सुधार कर जाते। आश्रम में रहने के उन्होंने बड़े उत्तम नियम बनाए हैं (जो अन्तिम पृष्ठ पर छपे हैं) ग्रहस्थियों, ब्रह्मचारियों, साधुओं और स्त्रीयों के लिए पृथक-पृथक स्थान है। स्त्रीयां बिना परदे रखे हुए बहुत पवित्र जीवन बिता रही हैं। यह उनकी धार्मिक शिक्षा का फल है अछूत स्कूल उनके स्वतन्त्र विचारों का नमूना है। कहां तक लिखूं स्वामी जी महाराज एक महा पुरुष थे और हम सब को उनका बहुत वियोग है परन्तु वह अब भी सूक्ष्म शरीर से अपने भक्तों की उसी प्रकार सहायता करते हैं।

"मेरी भावना" में सर श्री राम रईस, दिल्ली क्लौथ मिल, दिल्ली—

श्री महाराज के सत्संग में आने पर व्यक्ति की मानसिक स्थिति में कुछ ऐसी आश्चर्यजनक विचित्रता आ जाती थी जिसका यथार्थ वर्णन शब्दों में तो हो नहीं सकता तो भी यह कहा जा सकता है कि वह स्थिति बड़ी उच्च और भक्ति भाव

से प्लावित होती थी। सांसारिक उलझनों में पड़े हुए व्यक्ति को केवल अपने सत्संग से ऊंचा उठा देने की शक्ति रखने वाले महात्मा इस समय विरले ही होंगे। आप उसी सिद्ध कोटि के महात्माओं में से एक थे ऐसा मेरा **स्वानुभव** है।

"चौ० सूरजभान" इन्स्पैक्टर संगूर श्री महाराज जी की हस्ती संसार में बेनजीर थी। वह ज्ञान और धर्म के भण्डार थे। आप का तप संसार में सब से बढ़ा हुआ था। जिस समय आप का उपदेश होता था मनुष्य के हृदय से सब प्रकार के पाप लोभ, मोहादि विकार नष्ट हो जाते थे। हम जैसे मनुष्यों को उनका सत्संग कहां नसीब था परन्तु उन्होंने दया करके जींद में दर्शन दिए और हमारा उद्धार कर दिया। जींद का आश्रम बनवा कर श्री महाराज जी ने इलाके का बड़ा उपकार किया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि श्री महाराज जी सूक्ष्म रूप से आश्रम में अब भी मौजूद हैं और हमारी अब भी उसी प्रकार सहायता करते रहेंगे।

'प्रोफेसर बृजमोहन" बी० ए०—उनकी सेवा में बैठ कर हमारी आत्मा शुद्ध और बलवान हो जाती थी। वह सदैव ब्रह्म में लीन रहते थे और उनके दर्शन मात्र से मनुष्य बलात् परमात्मा की समीपता में चला जाता था। वह स्थूल शरीर से पृथक हो गए हैं परन्तु हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारी अध्यात्मिक उन्नति में वह सदैव हमारी सहायता करते रहेंगे।

"प्रोफेसर सानी राम" बी० ए० स्वामी जी की दिव्य मूर्ति और आकर्षक शक्ति विचित्र थी। जो श्रद्धा मुझको स्वामी जी में थी वह अन्य व्यक्ति में न थी। वह एक महान आत्मा थे। उनके दर्शन और भाव मात्र से हमको सुख शान्ति मिलती थी वह रह-रह कर हमको याद आया करेंगे।

"गुरु देव के संस्मरण" में पं० जगदीश शंकर पाठक एम० ए० एल एल० बी० लिखते हैं। १९२६ को दशहरे की छुट्टियों में भगवद्भक्ति आश्रम रामपुर रेवाड़ी में जाकर उनके चरणों को स्पर्श कर भाग्यशाली बना।

वह क्या थे ? यह मैं क्या कहूं ? मेरे लिए तो वह स्वयं नारायण थे। पृथ्वी का भार उतारने के लिये उन्होंने शरीर धारण किया था। ज्ञान दृष्टि से वह ब्रह्म स्वरूप थे। शक्ति के स्वरूप में वह ईश्वर थे। सन्त के रूप में परम दयालु थे, योगियों की गणना में पूर्ण योगी थे। आचार्य के रूप में वह समस्त विद्याओं के आचार्य थे। विद्वानों में अद्वितीय विद्वान थे। नीति में भगवान् कृष्ण के समान थे। कौन ऐसी विभूति थी जो उनमें न थी वह सब कुछ थे।

शरीर का तो कहना ही क्या है ? अखण्ड ब्रह्मचर्य से देदीप्यमान पूर्ण विकाश को प्राप्त इतना सुन्दर और मन मोहक शरीर था कि मनुष्य की तो बात ही क्या पशु पक्षी भी आकृति देख कर मोहित हो जाते थे।

एक मौनी को श्री गुरुदेव ने बड़ी मधुर स्नेहमयी वाणी से कहा भाई शास्त्रों में तो कहीं मौन व्रत प्रमाण नहीं। वाणी के संयम की बात कही गई है। वाणी का संयम अच्छा है कुछ ऋषियों के नाम लिये और अन्त में महर्षि दयानन्द का नाम भी आदर से लिया और कहा कि यह कोई मौन नहीं थे।

श्री गुरुदेव कहा करते थे कि ऋद्धि, मोक्ष सब गायत्री देती हैं। लाखों पुस्तकें गायत्री मन्त्र की अर्थ सहित श्री महाराज ही की प्रेरणा मात्र से बट गई। श्री गुरुदेव कहा करते थे कि प्राणी मात्र को वेदों के पढ़ने का अधिकार है। सब को प्रेम से पढ़ाओ श्री महराज जी को जाति पात का कोई विचार नहीं था। प्राणी मात्र से प्रेम था। अन्त्यज

बालक जब गाड़ी के पास आते थे श्री महाराज जी की गाड़ी से लिपट कर ऐसे खड़े हो जाते थे मानों अपने पिता के साथ हैं।

मार्मिक से मार्मिक बात श्री गुरुदेव ऐसे सीधे-सादे शब्दों में कहते थे जो सब लोग पढ़े और अनपढ़े दोनों भली भान्ति समझ जायें। ऐसा प्रतीत होता था कि दर्शन शास्त्र की कोई ऐसी बात नहीं जिसे प्राणी मात्र न समझ जायें।

"मेरे इष्ट देव में" कुमारी सुमित्रा देवी[1] हे देव : आपके दर्शन के बिना आज सारा आश्रम विह्वल हो उठा है आज सारा आश्रम त्राहि-त्राहि कर रहा है वियोगाग्नि से दहक रहा है।

आपकी गाड़ी संगीतमयी आवाज करती हुई इधर-उधर घूमती थी। सारे आश्रम का तथा वृक्ष लतादि का शृंगार करती चली जाती थी। सारे आश्रम को चमत्कृत करती हुई तथा प्राणि मात्र में प्रफुल्लता प्रदान करती थी, एक विशेष ही प्रकार का नव जीवन तथा उत्साह भरती हुई स्वर्गीय आनन्द प्रदान करती थी। स्वयं आनन्द के बीच में रहते थे।

आपकी वाणी कितनी अमृत सिक्त कितनी मधुर और कितनी सरस थी जिसके प्रवाह में स्वतः ही मनुष्य के आनन्दोद्रेक हो जाता था। जब आप उपदेशामृत पान कराते थे तो उसका कुछ अद्भुत् ही प्रभाव होता था जिससे चंचल मन भी स्थिर हो जाते थे साथ ही सुनने के लिये अधिकाधिक रुचि बढ़ती ही चली जाती थी। एक गूढ़ विषय को भी आप इतना सरल बना देते थे और उसे बातों-बातों में ऐसे कह देते थे जिस को सुन कर चित्त चमत्कृत हो जाता था उन दिव्य उपदेशामृत का पान करते-करते हृदय हिलोरें भरने लगता था। आपकी भव्य मूर्ति के दर्शन करते ही हृदय के अन्दर

१. सुपुत्री राव साहब व आधुनिक एम०एल०ए० हरियाणा।

एक अकथनीय और अदभुत शान्ति होती थी। सब इच्छाएं बिल्कुल शान्त हो जाती थीं। अरूण और विशाल तेजोमय नेत्रों में से सर्वदा दया व स्नेह से स्निग्ध प्रेमवारिधि उमड़ता प्रतीत होता था। दर्शन करते समय बहुत ही आनन्दानुभव होता था मानो सारे जन्म जन्मान्तरों के पाप नष्ट हो कर हम हजारों यज्ञों के फलों का उपभोग कर रहे हैं। आपकी दिव्य और भव्य मूर्ति को देख कर मनुष्य आकर्षित-सा हो कर निरन्तर ही उस दिव्य और जग दुर्लभ सौन्दर्य से स्निग्ध मूर्ति को देखने की इच्छा होती थी। परन्तु उन विशाल नेत्रों में स्नेहाधिक्य होते हुये भी इतना तेज और वे इतने ज्योतिर्मय थे कि आंखों को उनके सामने झुक जाना ही पड़ता था। दीन व पतितों के आप ही सहायक हैं।

"श्री प्रेम नाथ ठुकराल" बी ए० एल० बी० श्री महाराज ही का महात्म्य हमने नहीं जाना और हम जानने के योग्य भी न थे और अब तो ख्याल मजबूत होता जा रहा है कि पूरे तौर से उनका महात्म्या कोई जान भी नहीं सकता। क्यों कि उनको जानने का अर्थ है उनके बराबर ज्ञान प्राप्त करना और यह प्रायः असम्भव ही है। वह विलक्षण थे केवल यही हमने कुछ समझा है। उनका आना एक रहस्य था और उनका जाना भी एक रहस्य है। जिन कामों या जिन मनुष्यों से वह अत्यन्त प्रेम करते थे चलते समय उन्होंने उनकी तरफ आंख भर कर भी नहीं देखा, उनका नाम भी लेना छोड़ दिया। वह इस संसार के कामों में ऐसे ही नियम से लगे रहते थे जैसे सूर्य और चाँद परन्तु उनका लगाव केवल कमल की भान्ति था। बिना मतलब भी प्रेम होता है यह वह

---

१. आधुनिक, रिटायर्ड, सेशन जज, पंजाब-हरियाणा।

हमको करके बता गए। वह क्या थे यह तो वही जाने हां इतना हमें विश्वास वह करा गए कि हम सदैव उनके साथ हैं जो हमको साथ रखने की सच्ची इच्छा रखता है। यदि शुद्ध भाव से हम उनकी प्रार्थना करते रहेंगे तो जितना हमको जानने की जरूरत है उतना वह हमको बता देंगे और फिर हम लोगों से कह सकेंगे कि वह क्या थे? अब भी श्री महा राज जी गड्डी पर सूक्ष्म रूप से विराजमान हैं और हम को सन्मार्ग पर चलने का उपदेश कर रहे हैं?

जींद निवासी श्री सीता राम बी० ए० सेशन जज, संगूर श्री महाराज जी वेदों और शास्त्रों की व्याख्या करने में व्यास भगवान के तुल्य थे—वह अपूर्व विद्वान और महान तेजस्वी थे जो एक बार उन के दर्शन कर लेता था उस का मस्तक सदैव के लिए उनके चर्णों मे झुक जाता था उनके आत्मा को जाग्रत करने वाले उपदेश सदैव याद रहेंगे वे समस्त हिंदू जाति के शिरोमणि थे—आपने सब को भक्ति मार्ग पर चलाया और परमात्मा को प्राप्त करने के सुगम साधन बताये—आश्रम एक महान पुरुष की दिव्य विभूति है— ऐसे प्रभाव शाली सन्त कहां मिलते हैं वे उन दिव्य आत्माओं में से थे जो इस संसार को सौभाग्य, शान्ति प्रदान करने के लिये युग युगान्तर में प्रगट होती है—ऐसी दिव्य मूर्तियां, ऐसे उच्च कोटी के ब्रह्मर्षि संसार में दुर्लभ हैं—

श्री मान् हिज हाइनेस महाराजा सदाशिव राव पंवार रियासत देवास लिखते हैं—महाराज जी बड़ी विभूति थी, उनके समागम का स्वारस्य व स्वानन्द का ज्ञान व अनुभव उन्हीं को हो सकता है जो उन के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त कर चुके हैं भारत में ऐसे महात्माओं व साधु रत्नों की आवश्यकता है।

ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरूप।
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योति स्वरूप।
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप।
सुखात्मा चिदात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप।
भवात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरूप।
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप।

* आरती *

लहरा रही है ज्योति चिदानन्द की।
चिदानन्द की परमानन्द की। लहरा रही है॥
सकल ब्रह्माण्डों के पृष्ठ भाग पर
सत्ता स्फूर्ति सबको दे रही है निजानन्द की॥१॥
सब ब्रह्माण्डों के बाहर भीतर
हृदय कमल में सूर्य मन्डल में
जगमगा रही है ज्योति महानन्द की॥२॥
यह संसार असार है अन्तिम
एक ही ज्योति है अखण्डानन्द की॥३॥
सूर्य चन्द्र विद्युत और तारे
अग्नि ज्योति है भवानन्द की॥४॥
ज्योति बिना कुछ और नहो है
अहं ज्योति है ज्ञान यही है॥
अहं ब्रह्मास्मि ज्ञान की ज्योति
जग रही है घट घट परमानन्द की॥५॥

आश्रम के उद्देश्य

१- श्री भगवान की भक्ति का प्रचार करना ।
२- गोरक्षा और उसके लिए गोचर भूमि छुडवाना ।
३- वृक्ष लगवाना और उसके बीच में जलाशय बनवाना।
४- शिक्षा का प्रचार करना जिसमें मनुष्य मात्र विद्या लाभ कर सकें और प्राचीन प्रथा को फिर प्रचलित करना ।
५- बीमारियों के अवसर पर दवाई बाँटना ।
६- आसपास के ग्रामों में परस्पर केझगडे और वैमनस्य मिटा शान्ति और प्रेम बढ़ाना ।
७- सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जागृत करना
८- राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।

मनुष्य मात्र के लिए साधारण नियम

१- मनुष्य का पहला कर्तव्य है कि सद्गुरु की शरण में जावे और उनकी कृपा सम्पादन करने के लिए शुद्ध चित से उनकी सेवा करे ।
२- उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ विश्वास रक्खे
३- एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे।
४- साधु सज्जन का सत्संग करे ।
५- विषयों के आधीन न हो ।
६- शत्रुओं को मित्र बनावे।
७- अधिक उपाधि न बढावें ।
८- निरन्तर सारासार का विचार करता रहे ।
९- भूतमात्र पर दया रक्खे ।
१०- अहर्निश परमात्मा का ध्यान एवं उन पर दृढ आस्था रक्खे